अंक: 28
मई-अगस्त
2021

टीएचडीसी

पहल

राजभाषा गृह–पत्रिका

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED

महादेवी वर्मा

साहित्यकार परिचय

आधुनिक युग की मीरा के नाम से विख्यात महादेवी वर्मा का जन्म 24 मार्च, 1907 को उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध नगर फर्रूखाबाद में हुआ था। महादेवी वर्मा के पिता का नाम श्री गोविन्द सहाय वर्मा एवं उनकी माता जी का नाम श्रीमती हेमारानी देवी था। महादेवी वर्मा ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा इन्दौर में प्राप्त की। अल्पायु में विवाह हो जाने के कारण तथा ससुर के महिला–शिक्षा विरोधी होने के कारण उनकी आगे की शिक्षा में व्यवधान आ गया था किंतु ससुर की मृत्यु के बाद उन्होंने अपनी शिक्षा के टूटे क्रम को जोड़ते हुए 1920 में मिडिल एवं बी.ए. की परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। सन् 1932 में उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय में संस्कृत भाषा एवं साहित्य में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

महादेवी वर्मा के प्रयत्नों से 1935 में इलाहाबाद में प्रयाग महिला विद्यापीठ की स्थापना हुई एवं वे इस संस्था में प्रधानाचार्या एवं इसके बाद उपकुलपति पद पर भी आसीन रही। उन्होंने साहित्यकार संसद की स्थापना भी की और इसमें साहित्यकार का पद संभाला। महादेवी वर्मा ने लेखन के साथ–साथ अनेक पत्र–पत्रिकाओं का संपादन भी किया। सन् 1932 में उन्होंने महिलाओं की पत्रिका चांद के संपादन का कार्यभार संभाला। महादेवी वर्मा कुछ वर्षों तक उत्तर प्रदेश विधानसभा की मनोनीत सदस्य भी रही। श्रीमती महादेवी वर्मा जी आधुनिक हिंदी साहित्य में रहस्यवाद की प्रवर्तक भी मानी जाती हैं।

महादेवी वर्मा ने अपने लेखन से अनेक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त किए हैं । जैसे नीरजा के लिए सेक्सरिया पुरस्कार (1934), 'स्मृति की रेखाएं' के लिए द्विवेदी पदक (1941 ई.), हिंदी साहित्य सम्मेलन का मंगलाप्रसाद पुरस्कार (1943), भारत–भारती पुरस्कार (1943), साहित्य सेवा के लिए पद्म भूषण (1956), साहित्य अकादमी पुरस्कार (1979), यामा व दीपशिखा रचना के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार (1982), पद्म विभूषण पुरस्कार (1988), विक्रम, कुमाऊँ, दिल्ली व बनारस विश्वविद्यालयों द्वारा डी. लिट. की मानद उपाधि, हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा मंगलाप्रसाद पारितोषिक उपाधि, नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा विद्यावाचस्पति तथा भारत के राष्ट्रपति द्वारा पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित किया गया। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा भारत–भारती पुरस्कार प्रदान किया गया। मरणोपरांत उन्हें भारत सरकार की ओर से पद्म विभूषण पुरस्कार से भी अलंकृत किया गया।

जीवन के अंतिम समय तक साहित्य–साधना में लीन रहते हुए 80 वर्ष की अवस्था में 11 सितम्बर सन् 1987 ई. को प्रयाग में महादेवी वर्मा ने अपनी आँखें सदा–सदा के लिए बंद कर ली।

प्रमुख रचनाएं –

काव्य संग्रहः– 'निहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत', 'दीपशिखा', 'सप्तपर्णी' व 'हिमालय' आदि इनके काव्य संग्रह हैं।

गद्य साहित्यः– 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएं, 'पथ के साथी', 'क्षणदा', 'मेरा परिवार' और 'परिक्रमा' आदि **इनकी गद्य** साहित्य रचनाएं हैं।

निबंधः– 'श्रृंखला की कड़ियां, 'विवेचनात्मक गद्य', 'साहित्यकार की आस्था' तथा 'अन्य निबंध' आदि हैं।

संपादनः– चांद पत्रिका

निदेशक (कार्मिक) की कलम से

प्रिय साथियों,

वैसे तो विभिन्न माध्यमों से आप सभी से समय–समय पर संवाद होता ही रहता है परन्तु राजभाषा हिंदी की गृह पत्रिका "पहल" के माध्यम से आपके सम्मुख अपनी बात रखते हुए मुझे सदैव प्रसन्नता होती है। 12 जुलाई, 2021 को निगम का 34वां स्थापना दिवस मनाया गया। सामान्यतया यह कहा जाता है कि आगे बढ़ते हुए पीछे मुड़–मुड़ कर देखने से हमारी गति मंथर हो जाती है, परन्तु स्थापना दिवस ऐसा दिन है जब हमें स्वमूल्यांकन करते हुए अपने अतीत की कमियों एवं खामियों से सबक लेकर आगे की राह प्रशस्त करने के नए मार्ग खोजने का मौका मिलता है। हालांकि, आपकी महति ऊर्जा एवं पराक्रम से 34 वर्षों की लंबी एवं सफल विकास यात्रा में निगम ने अपने व्यावसायिक एवं अन्य क्षेत्रों में असीमित उपलब्धियां एवं कीर्तिमान स्थापित किए और इसके मार्ग में आई अनेक चुनौतियों का भी डटकर सफलतापूर्वक सामना किया परन्तु अभी यह सिर्फ एक शुरूआत है और मुझे विश्वास है कि निगम को सफलता की नई ऊंचाईयों पर पहुंचाने के लिए आप अपने सार्थक एवं अथक प्रयास पूर्व की भांति निरंतर जारी रखेंगे।

इसी क्रम में निगम में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के मूल्यांकन से यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि विगत वर्षों में निगम में इसके कार्यान्वयन में आशातीत वृद्धि हुई है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को पूरा करने के यथासंभव प्रयास किये जा रहे हैं। निगम के कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी के प्रति प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष सितंबर माह में राजभाषा विभाग द्वारा संचालित विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत कर्मचारियों को पुरस्कृत किया जाता रहा है तथा वर्ष भर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन कर कर्मचारियों को पुरस्कृत करने के साथ–साथ यह मूल्यांकन भी किया जाता है कि कर्मचारी हिंदी में कार्य करने में कितने निपुण हुए हैं । उनकी हिंदी की प्रशिक्षण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रत्येक तिमाही हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन भी नियमित रूप से किया जाता रहा है।

कोविड–19 महामारी के प्रकोप के कारण रोकथाम के दृष्टिगत सामाजिक दूरी का पालन करना अनिवार्य होने से जब सामूहिक कार्यक्रमों का आयोजन असंभव हो गया था, उस दौरान भी राजभाषा कार्यान्वयन की गति मंद न पड़े, इसके दृष्टिगत राजभाषा से संबंधित कार्यक्रम एवं गतिविधियां ऑनलाइन माध्यमों से आयोजित की गई और मुझे यह कहते हुए हर्ष हो रहा है कि इस प्रकार आयोजित कार्यक्रमों एवं गतिविधियों में प्रतिभागिता करने वाले कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि दर्ज की गई है। हालांकि, इस अवधि में कवि सम्मेलन जैसे बड़े आयोजन करना संभव नहीं हो पाया, परन्तु मुझे आशा है कि स्थिति सामान्य होने पर पूर्व की भांति ऐसे आयोजन करना भी संभव होगा।

आइए ! हम सब यह संकल्प लें कि विद्युत क्षेत्र के विकास में अपने कदम आगे बढ़ाते हुए उसी मनोयोग से हिंदी भाषा के विकास एवं उत्थान के लिए भी सदैव प्रयत्नशील रहेंगे।

धन्यवाद।

(विजय गोयल)

संपादकीय

राजभाषा गृह पत्रिका "पहल" का नया अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत है। निगम में राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर विकास एवं हिंदी में लेखन तथा पठन–पाठन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रकाशित की जा रही यह पत्रिका राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की पत्रिकाओं के प्रकाशन से संबंधित अपेक्षाओं को पूरा करने का हर संभव प्रयास कर रही है और मुझे यह कहते हुए हर्ष की अनुभूति हो रही है कि इस प्रयास में निगम के अधिकारी एवं कर्मचारी अपने लेखन की रचनात्मकता के माध्यम से अपना अमूल्य योगदान प्रदान कर रहे हैं। यह पत्रिका निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की कल्पनाओं एवं भावनाओं को साकार रूप देते हुए उनकी हिंदी में लेखन क्षमता को नए पंख लगाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रही है।

इस अंक के प्रकाशन में पाठकों से इतनी अधिक मात्रा में रचनात्मक एवं ज्ञानप्रद सामग्री हमें प्राप्त हुई कि पूरी सामग्री को इस अंक में शामिल कर पाना संभव प्रतीत नहीं होता, परन्तु यदि कोई सामग्री प्रकाशित होने से शेष रह जाती है तो उसे स्वतः ही अगले अंक में अग्रेषित कर दिया जाता है। वाह्य पाठकों से भी पत्रिका में प्रकाशनार्थ सामग्री निरंतर प्राप्त होती रहती है। हमारा प्रयास रहता है कि निगम के आंतरिक स्रोतों से प्राप्त लेखों एवं रचनाओं को प्रकाशन में प्राथमिकता दी जाए किंतु यदि किसी वाह्य स्रोत से कोई बहुत सारगर्भित सामग्री प्राप्त होती है तो उसको भी पत्रिका में स्थान दिया जाता है। पिछले अंक के लिए हमें पाठकों की अनेक प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई हैं जिनमें कुछ पाठकों ने बहुत अपनेपन से स्नेह के साथ रोष व्यक्त किया कि उनकी कविताओं को स्थान नहीं दिया गया। हम आपके स्नेह का स्वागत करते हैं और कोशिश करेंगे कि आपकी रचनाएं इस अंक में अवश्य ही प्रकाशित हो जाएं।

वास्तव में पाठकों का हिंदी के प्रति प्रेम एवं स्नेह दर्शाता है कि हिंदी का भविष्य बहुत स्वर्णिम होने जा रहा है क्योंकि हिंदी बहुत सरल, सहज एवं सुबोध भाषा है । भाषा विज्ञान के अनुसार हिंदी की देवनागरी लिपि पूर्णतः वैज्ञानिक है। हिंदी भाषा में जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। स्वतंत्रता आंदोलन के समय हिंदी ने संपर्क भाषा के रूप में कार्य करते हुए पूरे देश को एक सूत्र में पिरोया जिससे आपस में विचारों का आदान–प्रदान आसान हो सका। अनेक कवियों एवं लेखकों ने हिंदी भाषा के माध्यम से ही नवयुवकों में देशप्रेम की ज्वाला प्रज्ज्वलित की, जिसके परिणामस्वरूप हमने स्वतंत्रता की सुगंध को महसूस किया। हिंदी के प्रति लगाव एवं अनुराग राष्ट्र प्रेम का ही एक रूप है। अब तो विदेश में भी हिंदी अपनी आवश्यकता सिद्ध करती जा रही है फिर इसे अपने ही देश में अपनाने में कैसी शर्म। हिंदी को अपनाना शर्म का नहीं बल्कि गर्व का प्रतीक होना चाहिए।

राष्ट्र प्रेम की इसी भावना से ओतप्रोत होकर, आइए! हम सब मिलकर हिंदी में कार्य करें और हिंदी के लिए कार्य करें और दूसरों को भी ऐसा ही करने के लिए प्रेरित करें। यह हमारी सच्ची राष्ट्रभक्ति होगी।

(पंकज कुमार शर्मा)
वरि.हिंदी अधिकारी

पहल
हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
की राजभाषा गृह पत्रिका (अंक–28)

मुख्य संरक्षक
श्री आर. के. विश्नोई
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक
श्री विजय गोयल
निदेशक(कार्मिक)

मार्गदर्शक
श्री वीर सिंह
महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)
श्री ईश्वर दत्त तिग्गा
उप महाप्रबंधक (मा.सं.–स्थापना / हिंदी)

संपादक
पंकज कुमार शर्मा
वरि. हिंदी अधिकारी

संपादन सहयोग
नरेश सिंह
कनि. अधिकारी (हिंदी)
मंजु तिवारी
उप अधिकारी

संपर्क सूत्र
संपादक
"पहल"
हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
भागीरथी भवन, प्रगतिपुरम,
बाईपास रोड, ऋषिकेश–249201 उत्तराखंड
दूरभाष : 0135–2473614
ई–मेल: pankajksharma@thdc.co.in
thdchindi@gmail.com

पहल पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। इनसे टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

विषय सूची

लेख / प्रेरक प्रसंग / लघुकथा

		पृष्ठ सं.
1	विद्युत वाहन–भविष्य का वाहन एवं पर्यावरण मित्र	4
2	रुद्रनाथ और लालमाटी का सफर	7
3	सतर्क भारत, समृद्ध भारत	9
4	कितना भी पकड़ लो, फिसलता जरूर है	11
5	कोटेश्वर की भयावह रात	12
6	पुरुषार्थ	13
7	भारतीय संस्कृति में कलश का महत्व	14
8	कोरोनाकाल में अपने–अपने दुख	15
9	सड़कों की रूपरेखा	16
10	मां विध्यवासिनी मंदिर दर्शन	17
11	सुंदर चेहरा और सुंदर व्यवहार	18
12	डॉक्टर, यू कैन डू इट	19
13	किस क्षेत्र / परिवार के लोग श्रेष्ठ पुरुष होते हैं	21
14	शिक्षा की महिमा	22
15	योगश्चः चित्त वृत्ति निरोध (भाग–2)	23
16	हिंदी अनुभाग की ओर से	25

कविताएं

17.	मेरी बेटियां	27
18	आज मैंने देखा है	27
19	मरूस्थलों के बीचो–बीच	28
20	सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ रचना	28
21	कोरोना से जंग	29
22	अच्छा करने की चाहत	29
23	मार दो व्याकुल मन की चाहत / राष्ट्रभाषा	30
24	अपनों की याद पेन्दार्स गांव	31
25	घायल मन का अनायास पलायन	31

राजभाषा गतिविधियां / अन्य

26	राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक	32
27	हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन	33
28	नराकास हरिद्वार की अर्धवार्षिक बैठक	37
29	नराकास टिहरी की अर्धवार्षिक बैठक	38
30	अनुवाद प्रतियोगिता का आयोजन	39
31	सम्पादक के नाम पाती	40
32	हास परिहास	

लेख

विद्युत वाहन - भविष्य का वाहन, पर्यावरण मित्र वाहन

शिवराज चौहान
उप महाप्रबंधक (अ.एवं प्र. निदे. सचिवालय), ऋषिकेश

क्या आप भी पेट्रोलियम पदार्थों की दिन–प्रतिदिन बढ़ती कीमतों, हर बीतते दिन के साथ इनके घटते प्राकृतिक भण्डारों और वाहनजनित प्रदूषण के कारण वैश्विक पर्यावरण पर पड़ने वाले कुप्रभावों (घटती ओजोन की परत, ग्लोबल वार्मिंग, वायु प्रदूषण इत्यादि) के बारे में सोचकर चिन्तित हैं? बिल्कुल होंगे। लगभग सम्पूर्ण विश्व के बुद्धिजीवी इन कारणों से चिन्तित हैं। इन सभी समस्याओं का अभी तक आविष्कारित और उपयोगी एक मात्र समाधान माना जा रहा है, विद्युत वाहन अर्थात Electric Vehicle (EV)। एक या एक से अधिक विद्युत मोटर अथवा कर्षण मोटर (Traction moter) द्वारा चालित वाहन को ''विद्युत वाहन'' कहते हैं। विद्युत वाहन को वाहन से दूर स्थित स्रोत से कलेक्टर प्रणाली के द्वारा अथवा वाहन के साथ अथवा वाहन पर स्थापित बैटरी, सोलर पैनल, ईंधन जल अथवा विद्युत जैनेरेटर जैसे, ईंधन को विद्युत ऊर्जा में बदलने वाली प्रणालियों के द्वारा चलाया जाता है। EV में सड़क अथवा रेल पर चलने वाले वाहन, जल की सतह पर अथवा सतह के बीच चलने वाले जहाज, विद्युत विमान तथा विद्युत अंतरिक्ष यान आदि सम्मिलित हैं।

इतिहास:

EVs सर्वप्रथम 19वीं सदी के मध्य में अस्तित्व में आये, जब वाहनों को चलाने के लिए बिजली पंसदीदा स्रोतों में से एक था। जो उस समय के ईंधन चालित वाहनों की तुलना में आरामदायक और संचालन में आसानी प्रदान करती थी। सर्वप्रथम वर्ष 1827 में हंगरी के पादरी अन्योस जेड्लिक ने एक अपरिष्कृत किन्तु व्यावहारिक विद्युत मोटर का उपयोग किया, जिसमें स्टेटर, रोटर व कम्पुटेटर विद्यमान थे और अगले ही वर्ष उन्होंने इस मोटर से एक छोटी कार को चलाया। धीरे– धीरे विकास पथ पर आगे बढ़ते हुए वर्ष 1838 में स्काटलैण्ड निवासी राबर्ट एंडरसन ने एक अपरिष्कृत इलैक्ट्रिक लोकोमोटिव बनाया, जो 04 मील प्रति घण्टा (06 किमी/घण्टा) की रफ्तार को प्राप्त कर सकता था। बड़े पैमाने पर इलैक्ट्रिक वाहनों का उत्पादन अमेरिका में वर्ष 1900 में हुआ। वर्ष 1900 के आस–पास अमेरिका में उपयोग की जाने वाली कारों का 28% इलैक्ट्रिक कारें ही थी। अमेरिका में इलैक्ट्रिक कारों के चलन का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि तत्कालीन राष्ट्रपति वुड्रो विल्सन व उनके सुरक्षा गार्ड वाशिंगटन डीसी में उनके मिलबर्न इलैक्ट्रिक वाहनों पर एक चार्ज में 100–110 किमी. की यात्रा किया करते थे। किन्तु बीतते समय के साथ, बेहतर होते सड़कों के नेटवर्क, अमेरिका के कुछ क्षेत्रों में जीवाश्म संसाधनों के पाये जाने एवं फलस्वरूप सस्ते ईंधन की उपलब्धता, गैसोलीन आधारित इंजनों की सस्ती व निरापद लम्बी यात्रा एवं उनके द्वारा उत्पन्न ध्वनि में कमी, 1912 में इलैक्ट्रिक स्टार्टर की खोज, 1913 में हेनरी फोर्ड द्वारा बड़े पैमाने पर गैसोलीन आधारित वाहनों के उत्पादन आदि कारणों से इलैक्ट्रिक वाहन अधिक लोकप्रिय नहीं रहे और गैसोलीन आधारित इंजनों का आधिपत्य होता चला गया। आधुनिक IC-Engines का लगभग 100 वर्ष तक मोटर वाहनों को चलाने में आधिपत्य रहा किन्तु अन्य प्रकार के वाहनों, रेलगाड़ी तथा अन्य छोटे वाहनों के लिए विद्युत शक्ति का उपयोग सामान्यतया होता रहा।

इलैक्ट्रिक वाहन पर संग्रहण के उपलब्ध स्थान की सीमाओं के चलते उस समय इलैक्ट्रिक कार अधिक प्रचलित नहीं हुई, किन्तु इलैक्ट्रिक ट्रेन, उनकी आर्थिकी व प्राप्त की जाने वाली गति के कारण खूब प्रचलित हुई। बीसवीं शताब्दी में इलैक्ट्रिक रेल परिवहन का एक मुख्य साधन बन गई। जिसमें प्लेट फार्म ट्रक, फोर्कलिफ्ट ट्रक एम्बुलेन्स, टो ट्रैक्टर्स, इत्यादि का प्रमुख योगदान है। बीसवीं सदी में इंग्लैण्ड दुनिया में इलैक्ट्रिक

डेटरायट इलैक्ट्रिक मॉडल 47 के साथ एडीसन

सड़क वाहनों का सबसे अधिक उपयोग करता था। स्विटजरलैण्ड में जीवाश्म आधारित ऊर्जा संसाधनों के अभाव के कारण रेल नेटवर्क के विद्युतीकरण में द्रुत प्रगति नोट की गयी। तत्पश्चात सर्वप्रथम एडीसन ने रिचार्जेबल निकल–आयन बैटरी को इलैक्ट्रिक कार में उपयोग करने की वकालत की।

इक्कीसवी सदी में ई.वी. तकनीक में विकास, नवीकरणीय ऊर्जा के बढ़ते प्रभाव, और गैसोलीन आधारित इंजनों के जलवायु परिवर्तन और अन्य पर्यावरणीय मुद्दों पर कुप्रभावों की जानकारी और जागरूकता के कारण इलैक्ट्रिक वाहन (सामान्यतः इलैक्ट्रिक कार) के पुनरुत्थान को बल मिला।

परीक्षण कालः–

मेटल–आक्साइड सेमी कण्डक्टर (MOS) के उद्भव के साथ आधुनिक इलैक्ट्रिक सड़क वाहनों के विकास को बढ़ावा मिला, जिसके पश्चात इलैक्ट्रिक वाहनों में MOS फील्ड इफेक्टर ट्रंजिस्टर (MOSFET) का उपयोग हुआ, जिसके कारण अधिक स्विचिंग आवृति, प्रचालन की सुगमता, शक्ति ह्रास में कमी और कीमतों में भारी गिरावट के कारण इलैक्ट्रिक वाहन तकनीकी में काफी प्रगति हुई। कालान्तर में इन्सूलेटेड गेट बाइपोलर ट्रान्जिस्टर (IGBT) तकनीकी के प्रयोग से इलैक्ट्रिक वाहनों में Synchronous Electric Motor का प्रयोग आरम्भ हुआ। आधुनिक सड़कों पर चलने वाली इलैक्ट्रिक कारों के विकास में लीथियम– आयन बैटरी का महत्वपूर्ण योगदान है, जिन्हें 1980 के दशक में जॉन गुडइनफ, रैचिड याजमी और अकीरा याशिनो द्वारा आविष्कारित किया गया। इसके प्रयोग से इलैक्ट्रिक वाहनों से लम्बी दूरी की यात्रा सम्भव हो पायी।

इलैक्ट्रिक वाहनों के मुख्य घटकः

इलैक्ट्रिक वाहनों का कार्य तंत्र आंतरिक दहन इंजन की कार्य प्रणाली से एकदम भिन्न होता है। इनकी ईंधन मितव्ययिता आंतरिक दहन इंजन चालित पारंपरिक वाहनों से काफी अलग होती है। बुनियादी तंत्र और संचालन सिद्धांत से लेकर उपयोग और रखरखाव के तरीकों आदि से दोनों श्रेणियां कई पहलुओं में भिन्न हैं। EVs में अपनी रूचि का आकलन करने के लिए उपभोक्ता को आदर्श रूप से इन दोनों श्रेणियों के अंतरों को समझना आवश्यक है।

जैसा कि सर्वविदित ही है कि EVs, मोटर को चलाने और ड्राइविंग के लिए आवश्यक शक्ति उत्पन्न करने के लिए बैटरी में संचयित की गई विद्युत का उपयोग करते हैं, आंतरिक दहन इंजन वाहनों, जिनमें इंजन उस शक्ति को उत्पन्न करने के लिए जीवाश्म ईंधन का उपयोग करता है और EVs का यही बड़ा और मुख्य अंतर है। आंतरिक दहन वाहनों के लिए दो सबसे महत्वपूर्ण घटक इंजन और ट्रांसमिशन की EVs में कोई आवश्यकता नहीं होती है। बैटरी की संचयित विद्युत को गतिज बल में परिवर्तित करने के लिए निम्न आवश्यक घटक हैं, जो EV को गति प्रदान करते हैं:

मोटरः मोटर विद्युत ऊर्जा को गतिज ऊर्जा में परिवर्तित करती है और पहियों को गतिमान करती है। इंजन के बजाय मोटर का उपयोग करने के कई लाभ हैं। पहली बार EVs की सवारी करने वाले यात्री इनकी शांत और आरामदायक यात्रा की सदैव सराहना करते हैं। इसके अलावा EVs पावरट्रेन (वाहन पर उपलब्ध कल–पुर्जे) इंजन से छोटी होने के कारण बचे हुए स्थान को बड़े केबिन या भंडारण के लिए अतिरिक्त स्थान प्रदान करने हेतु अवसर प्रदान करता है।

मोटर भी एक प्रकार से जनरेटर का रूप है। यह उतराई पर वाहन के उतरते समय गतिज ऊर्जा को बैटरी में विद्युत ऊर्जा के रूप में संचयित करती है। ऊर्जा बचत का यही सिद्धान्त तब भी लागू होता है जब कार अपनी गति को कम कर रही होती है और पुनर्योजी ब्रेकिंग सिस्टम द्वारा ऊर्जा बचत की जाती है। कुछ EVs में स्टीयरिंग व्हील पर पैडल शिफ्टर्स के माध्यम से पुनर्योजी ब्रेकिंग के स्तर को नियंत्रित कर सकते हैं, जो न केवल ईंधन आर्थिकी में सुधार करता है बल्कि ड्राइविंग के लिए एक दिलचस्प और मजेदार तत्वों को भी जोड़ता है।

रिड्यूसरः रिड्यूसर एक तरह का ट्रांसमिशन है, जिसमें यह मोटर की शक्ति को पहियों तक प्रभावी ढंग से पहुंचाने का काम करता है। कर्षण मोटर आंतरिक दहन इंजन की तुलना में कहीं अधिक उच्च आरपीएम पर कार्य करती हैं, इसलिए रिड्यूसर (ट्रांसमिशन) ड्राइविंग परिस्थितियों के अनुरूप इंजन आरपीएम को बदलता है। रिड्यूसर द्वारा ही आरपीएम को वांछित उपयुक्त स्तर तक कम किया जाता है, इसीलिए इसे रिड्यूसर नाम

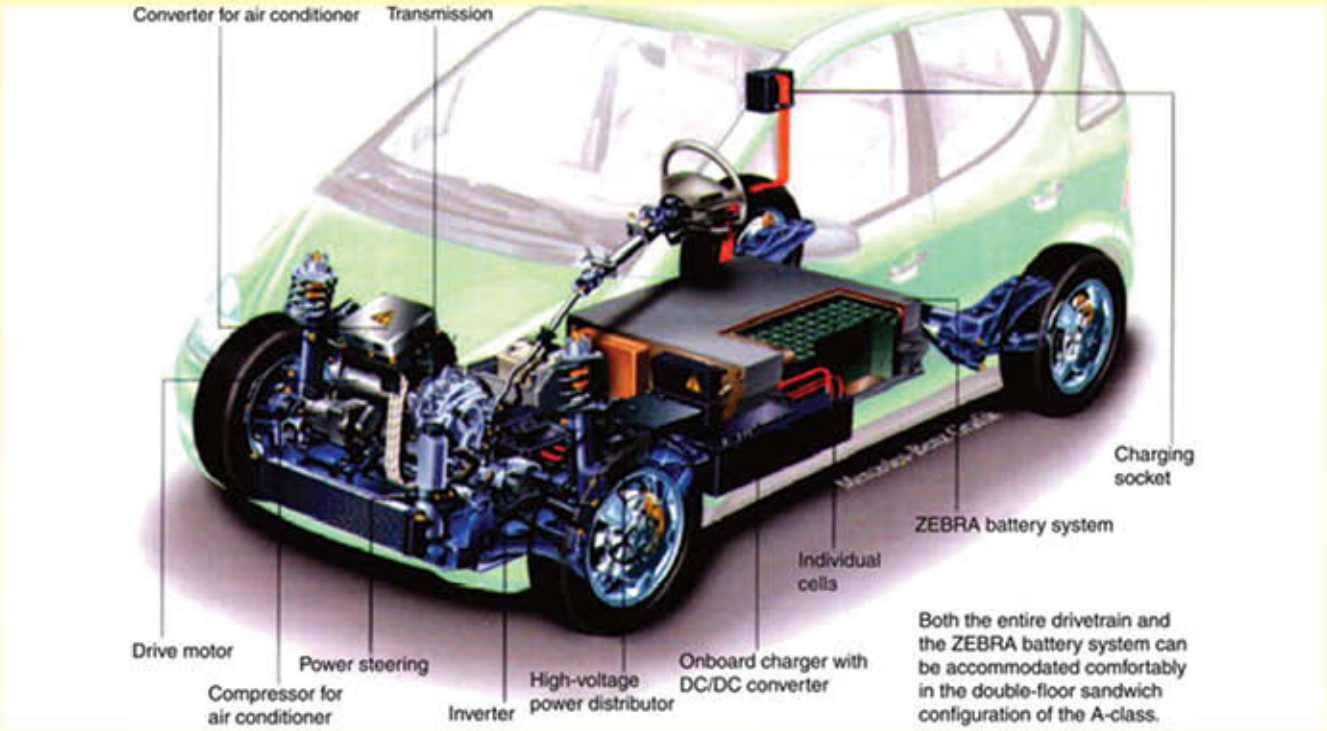

दिया गया है। EVs आरपीएम की इस कमी के कारण उत्पन्न परिणामी उच्च टॉर्क का लाभ उठा पाते हैं।

बैटरी: आंतरिक दहन इंजन में ईंधन टैंक की भांति EVs में बैटरी विद्युत ऊर्जा को संग्रहीत करती है। EVs की अधिकतम ड्राइविंग दूरी अक्सर बैटरी क्षमता द्वारा निर्धारित की जाती है, बैटरी की क्षमता जितनी अधिक होगी, वाहन एक चार्ज में उतनी अधिक दूरी तय करेगा। ड्राइविंग दूरी के दौरान चार्जिंग स्टेशनों पर बार–बार रूकने की कष्टप्रद अनिवार्यता, समय की बरबादी और परिणामस्वरूप मानव संसाधन की बरबादी को आधार मानते हुये बैटरी की क्षमता बढ़ाना एक स्पष्ट विकल्प प्रतीत हो सकता है,लेकिन चुनाव वास्तव में इतना आसान नहीं है, क्योंकि बैटरी के आकार और वजन का वाहन के प्रदर्शन पर काफी कुप्रभाव पड़ता है। बड़ी और भारी बैटरी न केवल केबिन/भंडारण स्थान को कम करती है बल्कि ऊर्जा दक्षता और ईंधन आर्थिकी को भी बिगाड़ती है। प्रदर्शन को अनुकूलित करने का सबसे अच्छा तरीका, बैटरी के ऊर्जा घनत्व को अधिकतम करना है– यानी, एक छोटी बैटरी जो जितना संभव हो उतना विद्युत ऊर्जा को संग्रहीत कर सके।

बैटरी प्रौद्योगिकी में हालिया प्रगति के कारण EVs बैटरी घनत्व और ड्राइविंग दूरी के मामले में पुराने मॉडलों पर महत्वपूर्ण उन्नयन का दावा करते हैं। उदाहरणत: KIA सोल बूस्टर EV, 64 kwh लिथियम–आयनबैटरी से लैस है जो एक चार्ज में 386 किमी (कोरियाई प्रमाणन मानकों के अनुसार) तथा टेस्ला मॉडल 3 लांग रेंज एक चार्ज में 560 किमी की अधिकतम दूरी तय करने का दावा करती है।

EVs बैटरी जीवन काल के सन्दर्भ में निम्न महत्वपूर्ण जानकारी साझा करना आवश्यक है। यदि चार्जिंग पैटर्न ऐसा है कि पूरी बैटरी समाप्त होने पर पूरी तरह से रिचार्ज की जाती है तो बैटरी को 1,000 चार्ज के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। यदि बैटरी आधा (50%) उपयोग के बाद रिचार्ज की जाती है तो 5,000 रिचार्ज, अगर बैटरी का पांचवा हिस्सा (20%) उपयोग के बाद रिचार्ज किया जाता है, तो बैटरी को 8,000 बार तक रिचार्ज किया जा सकता है अर्थात अगर EV एक दिन में अधिकतम ड्राइविंग दूरी के (20%) के बराबर चलाई जाती है और हर रात रिचार्ज की जाती है, तो बैटरी 8,000 दिनों (22 साल) तक चल सकती है।

क्रमश:..... अगले अंक में

यात्रा–वृतांत

रुद्रनाथ और लालमाटी का सफर

सतेन्द्र सिंह कुंवर,
अवर अभियंता, वीपीएचईपी, पीपलकोटी

भगवान भोलेनाथ के पांच केदार में से एक, रुद्रनाथ मंदिर से 8 से 10 किमी. की दूरी पर स्थित लालमाटी वह जगह है जहां विशेष रूप से भगवान रूद्रनाथ के श्रृंगार के लिए भक्त लोग ब्रह्मकमल लाने जाते हैं। यहां जाने के लिए हर किसी को अनुमति नहीं मिलती क्योंकि यह एक पर्यटन क्षेत्र न होकर देवताओं का निवास स्थान है, इसलिए मंदिर के मुख्य पुजारी की आज्ञा से ही यहां की ओर प्रस्थान किया जाता है। समुद्रतल से लगभग 2,290 मीटर की ऊँचाई पर स्थित रुद्रनाथ मंदिर तक पहुंचने के लिए एक ट्रैक चमोली जिले में स्थित गोपेश्वर नामक जगह से 4 किमी. दूर सगर गांव या ग्वाड़ गांव से प्रारंभ होता है जहां से लगभग 18 किमी. की दुर्गम चढ़ाई एवं पहाड़ों को पार कर रुद्रनाथ मंदिर तक पहुंचा जा सकता है।

सफर.....

वह रक्षाबंधन का समय था और उस समय रुद्रनाथ मंदिर में लोगों की संख्या किसी और समय की अपेक्षा सबसे अधिक होती है। रुद्रनाथ मंदिर का ट्रैक सामान्यतः दो दिन का है परंतु अगर किसी को प्रकृति का पूर्ण रूप से आनंद लेना है तो वह रुक भी सकता है। रहने के लिए बीच–बीच में पड़ाव हैं, जहां रहने की उचित व्यवस्था है। क्योंकि समय रक्षाबंधन का था तो इस समय अधिक भीड़ होने के कारण लगभग सभी धर्मशाला एवं होटल पूरी तरह से भरे थे। सौभाग्य से हम पांच लोगों को रहने के लिए एक धर्मशाला में कमरा मिल गया था। अगस्त का महीना होने के कारण उन दिनों बरसात भी बहुत हो रही थी। रुद्रनाथ मंदिर की उन ऊँचाइयों पर बारिश और ठंड का पूर्वानुमान लगाना एक तरह से असंभव सा कार्य है इसलिए बरसात की चिंता न करके हम अपने सफ़र के लिए निकल गए।

उस समय श्रद्धालु निरंतर बड़ी संख्या में आते चले जा रहे थे। रात को भंडारे का आयोजन था तो हमने भी उसमें अपना सहयोग दिया तथा श्रद्धालुओं को रात का खाना बारिश की बूंदों के साथ–साथ खिलाया। समय 9 बजे के करीब था परंतु श्रद्धालुओं का आना बंद ही नहीं हो रहा था। उस दिन रुद्रनाथ मंदिर में रिकॉर्ड तोड़ संख्या बारह सौ से पार पहुंच गई थी। रात को भी श्रद्धालुओं का टेंट के नीचे, आग के पास बैठने के अलावा कुछ और रास्ता नहीं था। वैसे धर्मशाला में रूके श्रद्धालुओं को भी प्रभु ने पानी की बूंदों से दूर नहीं रखा क्योंकि अत्यधिक बरसात होने के कारण वहां भी अब छतों ने टपकना शुरू कर दिया था। हम लोग भी उसी

धर्मशाला में थे। ठंड और पानी की बूंदों ने सोने तो कहां देना था, सो हम रात भर उठे ही रहे। कोशिश बहुत की थी सोने की, पर शायद उस दिन नींद नहीं, कुछ और लिखा था प्रभु ने। रात के करीब दो बज रहे थे तभी हमारे बड़े भाई (ग्राम प्रधान ग्वाड़) ने कहा "उठो, नहाने चलो"। प्रभु के श्रृंगार के लिए जिसको लालमाटी चलना हैं, ब्रह्मकमल लेने के लिए। जैसे ही उनका वाक्य ख़त्म हुआ, हम सब एकदम से उठ खड़े हुए। हम लोगों में से दो को वहां का रास्ता पता था। अक्सर कहा जाता है कि जिसको वहां का रास्ता पता नहीं होता है, वह फूलों की सुगंध से रास्ता भटककर उधर ही भटकता रहता है। तो अब लालमाटी जाने के लिए हम नहाने नीचे नारद कुंड की तरफ चले गए। पानी का तापमान यही रहा होगा करीब 6 से 8°C। नहाने के बाद हम मंदिर प्रांगण में पहुंचे और वहां के पुजारी जी के मुख्य सेवक को उठाया। ब्रह्मकमल लेने जाने से पहले हमने उनसे मंदिर का द्वार खुलवाकर आवश्यक पूजा करवाई और फिर

उनका आशीर्वाद प्राप्त कर हम निकल चले लालमाटी के सफर पर। समय लगभग 3 बजे का था जब हमने यात्रा शुरू की। चूंकि हमें सुबह नौ बजे से पहले मंदिर पहुंचना था तो सभी लोग बहुत तेज़ गति से चले जा रहे थे। मैंने भी अपनी पूरी कोशिश की परन्तु दो से तीन किमी. की खड़ी चढ़ाई चढ़ने के बाद मेरी हालत अब दयनीय होने लगी थी। मैं अब अपनी हिम्मत खोने लगा था। मैंने बाकी साथियों को बोला रुक जाओ और मैं एक जगह पर बेसुध होकर लेट गया। बाकी साथियों ने मुझे हिम्मत कर चलने को बोला क्योंकि ज्यादा आराम करने पर सुबह हो जाती और फिर धूप अपने सर पर होती (लालमाटी पर सुबह होने के तीस मिनट बाद ही सूर्योदय हो जाता है) और पहाड़ की चटकती धूप में चढ़ाई चढ़ना और भी मुश्किल हो जाता। यह सब सोच कर मैंने थोड़ी हिम्मत जुटाई और कोशिश करके उठा और चलना शुरू किया। सुबह के लगभग पांच बज गए थे, अंधेरा छट गया था और हम उस ऊँचाई पर जाकर बैठ गए जहां से पूरे चमोली क्षेत्र, माता अनसूया देवी मंदिर को साफ–साफ देखा जा सकता था। यह दृश्य अपने आप में बहुत मनोहारी था। बादलों को हम अपने नीचे देख रहे थे तो ऐसा महसूस हो रहा था जैसे हम बादलों पर चल रहे हों। हमने करीब पन्द्रह मिनट वहां पर आराम कर अपनी यात्रा जारी रखी।

हमें करीब चार किमी. की खड़ी चढ़ाई और पार करनी थी और अब हम उस क्षेत्र के बुग्याल से गुजर रहे थे। वहां विभिन्न प्रजाति के फूलों की सुगंध कुछ ऐसी थी कि लोग बेहोश हो जाएं। कुछ इसी प्रकार का अनुभव मेरे साथ भी हुआ। मैं जब उन फूलों के बुग्याल से गुजर रहा था तो एक जगह मुझे थोड़ा ठोकर लगी और जब मैं संभला तो मैं अपनी चप्पलें ढूंढने लग गया। सब लोग मुझसे थोड़ा आगे चले गए थे, उन्होंने पीछे देखा और मुझे पूछा, क्या हो गया? मैंने भी जवाब दिया अपनी चप्पलें ढूंढ रहा हूं, शायद कहीं छूट गई हैं। फिर उन्होंने जो कहा उससे जैसे मेरा सारा नशा उतर सा गया। उन्होंने कहा कि हम तो नंगे पैर आये थे, मंदिर से। यह सुन कर अब मैं संभल गया था, पर इतना समझ गया था कि मुझ पर अब वनदेवी ने अपना प्रभाव छोड़ दिया है (पहाड़ में मान्यता है कि ये सारे वन, बुग्याल वन के देवी देवताओं का क्षेत्र होता है, इसीलिए इस बात का विशेष ध्यान रखना होता है कि वन देवी देवताओं को कुछ नुकसान न हो या कुछ ऐसा शोर इत्यादि वहां न हो जिससे वहां रहने वाले जीव जंतुओं को कुछ परेशानी हो, इसलिए अक्सर ऐसे क्षेत्र में रोना, हल्ला करना सख्त मना होता है)।

अब हम लालमाटी क्षेत्र में प्रवेश कर चुके थे और यहां अब फूलों की सुगंध और तेज़ हो गयी थी। हमें अब ब्रह्मकमल भी दिखने शुरू हो गए थे। ब्रह्मकमल एकदम खड़ी चट्टानों पर खिले थे और उन चट्टानों पर पहुंचना अपने आप में एक चुनौती थी। अब हम ठहरे भोलेनाथ के भक्त, तो हिम्मत करने में क्या संकोच। हमने अब वन देवी–देवताओं की पूजा कर ब्रह्मकमल तोड़ना शुरू किया–कुछ फूल मंदिर के लिए, कुछ अपने घर के लिए, कुछ दोस्तों के लिए। ये फूल साक्षात भगवान रूप होते हैं, इनकी खुशबू इतनी सुगंधित होती है कि आत्मा प्रसन्न हो जाए सुबह के लगभग साढ़े सात बज गए थे और हमें मंदिर के लिए जल्दी–जल्दी निकलना था क्योंकि वहां हमारा इंतज़ार हो रहा था। हम लगभग सुबह के साढ़े नौ बजे मंदिर परिसर में पहुंच गए थे। हमने साथ लाए ब्रह्मकमल श्री रूद्रनाथ मंदिर के मुख्य पुजारी को सौंपकर प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त किया। पुजारी जी ने भी रक्षाबंधन के पावन अवसर पर हमें राखी बांधकर आशीर्वाद दिया। इस प्रकार हमारा यह लाल माटी का सफर समाप्त हुआ और हम दिन का खाना खाने के बाद दोपहर दो बजे मंदिर से वापस घर के लिए निकल गए। वापसी में मन इतना प्रसन्न था कि ऐसा लग रहा था जैसे दुनिया में अगर सबसे शांत और सुन्दर जगह कोई है, तो यहीं है।

लेख

सतर्क भारत समृद्ध भारत

हरीश चन्द्र उपाध्याय
वरिष्ठ प्रबंधक (भू–विज्ञान एवं भू–तक.), ऋषिकेश

भारत वर्ष को कभी सोने की चिड़िया कहा जाता था इससे आप अनुमान लगा सकते हैं कि भारतवर्ष के पास कितनी धन संपदा होगी परन्तु मुगल शासकों तथा अंग्रेजों ने चोरी तथा लूट करके भारतवर्ष को बहुत नुकसान पहुंचाया। किसी भी देश का विकास तभी संभव है जब वहां के देशवासियों में आपसी भाईचारा एवं विश्वास हो एवं अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम, इज्जत तथा समर्पण हो। जिस धरती पर जन्म लिया वो धरती हमारी माँ है। उस धरती पर अपना योगदान देने की हमेशा निष्ठा होनी चाहिए। इसको इस तरह भी बोला जा सकता है कि हम अपने घर के प्रति, समाज के प्रति, अपने आसपास के प्रति तथा जिस संस्था में कार्यरत हैं उस संस्था के प्रति भी निष्ठावान रहें। भारतीय संस्कृति में निहित प्राचीनता, निरंतरता, ग्रहणशीलता, समन्वयवाद, धार्मिक सहिष्णुता, सार्वभौमिकता, वसुधैवकुटुम्बकम जैसे तत्व उसकी उत्कृष्ट विशेषताओं को परिलक्षित करते हैं।

सतर्क कैसे रहें :–

हम सबका परम कर्तव्य है कि हम अपने कार्य के प्रति निष्ठावान एवं सतर्क रहें। किसी भी संकट के समय एकजुट होकर सामना करें। आज जैसे कोरोना महामारी ने पूरे विश्व के सामने संकट पैदा किया है ऐसे समय में भी पूरे देशवासियों को एकजुट होकर सामना करना चाहिए। निस्वार्थ भाव से अपना योगदान देना चाहिए। आज हमें हर कदम पर सतर्क रहना है वो चाहे अपने आसपास हो या देश की सीमा पर हो। शास्त्रों में लिखा है, ये गुण इंसान को कौए (कव्वे) से सीखना चाहिए। देश में सतर्कता एवं सुरक्षा हेतु सरकार द्वारा बहुत सारे बिंदुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है, जो निम्न प्रकार हैं :–

पारदर्शिता:– किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में पारदर्शिता बुनियादी मूल्य है। प्रत्येक कार्य में पारदर्शिता होना अति आवश्यक है। हमें कभी भी किसी सूचना की आवश्यकता हो तो वह तुरंत मिल जाए। प्रशासन में पारदर्शिता होने से सरकार के प्रदर्शन, विभिन्न कार्यों पर किए जाने वाले खर्च और सरकार की गतिविधि के बारे में पता लग जाता है जो प्रशासन में जवाबदेही को सुनिश्चित करता है तथा अनैतिक गतिविधियों जैसे भ्रष्टाचार आदि पर अंकुश लगता है। कार्यालय में भी यदि कोई अधिकारी/कर्मचारी काम न करे या काम को रोके तो उसकी जवाबदेही (Accountability) सुनिश्चित करनी चाहिए। किसी भी प्रकार का अनुमोदन वाला कार्य हो तो वह सब ऑनलाइन होना चाहिए, जिससे आम इंसान को उस कार्यालय के चक्कर न काटने पड़े। पासपोर्ट, ड्राइविंग लाइसेंस, वीजा, आधार कार्ड, आई कार्ड, पास बुक सब घर बैठे ही ऑनलाइन बनाने की व्यवस्था कायम होनी चाहिए। मेरा तो मानना है कि मतदान भी ऑनलाइन कर देना चाहिए। पूरे देश में इंटरनेट तथा इलेक्ट्रिसिटी सर्वत्र विद्यमान रहनी चाहिए।

मजबूत कानून व्यवस्था:– मजबूत कानून व्यवस्था शासन की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। यह जन मानस के लिए अच्छे समाज और अच्छे माहौल को पैदा करती है। आज भारत में मजबूत कानून व्यवस्था की आवश्यकता है क्योंकि इंसान को गलत (हत्या, चोरी, डकैती, रिश्वतखोरी, बलात्कार, अपहरण करना आदि) कार्य करने में कोई डर नहीं है। सख्त कानून हो तथा देश के सत्ताधारी नेता, अधिकारी, पैसे वाला, अभिनेता, गरीब सबके लिए बराबर हो। यदि हम अरब देशों (ईरान, सऊदी अरब आदि) की तरफ नजर डालें तो कानून का असली रूप वहां दिखाई देता है। कानून का भय जब तक नहीं होगा तब तक अपराध बढ़ते जाएंगे। आज कानून पर विश्वास न होने से इंसान शिकायत करने से भी डर रहा है क्योंकि पुलिस पर विश्वास नहीं है। आज पैसे वाला व्यक्ति, अभिनेता या सत्ताधारी नेता गलत काम करके भी बढ़िया सा वकील रखकर बरी हो जाते हैं जो कि भारत की न्याय व्यवस्था में बड़ी कमी है। जब तक सख्त कानून नहीं होगा तब तक गलत काम बढ़ते जाएंगे। सरकार ऐसे नियम बनाए कि प्रत्येक व्यक्ति को अपना 10 घंटे देश सेवा में देना है यानि रोजगार हो या न हो सबसे आउटपुट लेना अनिवार्य करना चाहिए।

कैमरा :– सडकों में, चौराहों में, सारे कार्यालयों एवं

सार्वजनिक स्थानों में कैमरे लगे होने से अपराध सामने आएंगे तथा आदमी को कुछ भी गलत करने से पहले सोचना पड़ेगा। देश की सीमाओं पर भी जगह–जगह उच्च क्वालिटी एवं पॉवर के कैमरे लगाने चाहिए। आज की तारीख में विज्ञान इतनी उन्नति कर रहा है कि कैमरे के अलावा भी अनेक उपकरण, ऐप एवं साधन हैं जिनका इस्तेमाल जगह–जगह किया जा सकता है। इसके अलावा हम सबको सतर्क रहना अति आवश्यक है तथा कहीं भी कोई भी गलत करे तो उसको सजा देने या दिलवाने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए ।

समृद्ध हेतु प्रयास :–

प्रधानमंत्री जी ने कुछ समय पहले एक आत्मनिर्भर भारत के निर्माण' का वादा किया है। पीएम मोदी का 'आत्मनिर्भर भारत अभियान', उनकी पार्टी की मूल अवधारणा के अनुसार एक महत्वाकांक्षी परियोजना है जिसका उद्देश्य सिर्फ़ कोविड–19 महामारी के दुष्प्रभावों से लड़ना नहीं, बल्कि भविष्य के भारत का पुनर्निर्माण करना है। अपने संबोधन में पीएम मोदी ने कहा, "अब एक नई प्राणशक्ति, नई संकल्प शक्ति के साथ हमें आगे बढ़ना है। वे बोले, "हाल में सरकार ने कोरोना संकट से जुड़ी जो आर्थिक घोषणाएं की थीं और जो रिज़र्व बैंक के फैसले थे और आज जिस आर्थिक पैकेज का ऐलान हो रहा है, उसे जोड़ दें तो ये क़रीब–क़रीब 20 लाख करोड़ रुपए का है। यह पैकेज भारत की जीडीपी का क़रीब–क़रीब 10 प्रतिशत है। 20 लाख करोड़ रुपए का यह पैकेज, 2020 में देश की विकास यात्रा में आत्मनिर्भर भारत अभियान को एक नई गति देगा।"

इसके अलावा, स्थानीय उत्पादों का उत्पादन करने और उन्हें प्रतिस्पर्धा में खड़ा करने के लिए स्थानीय उद्यमियों और निर्माताओं को कुछ सुरक्षा राशि भी देनी होगी जिससे विश्व व्यापार संगठन के सदस्यों के साथ भारत का सीधा टकराव होगा। 'हमें लोकल चीज़ों को लेकर वोकल होना चाहिए.' यानी भारतीयों को स्थानीय चीज़ों के बारे में ज़्यादा बात करनी चाहिए, खुलकर बात करनी चाहिए। आत्म–निर्भरता वैसे भी हर देश का एक वांछित सपना होता है। इस समय एक वायरस ने दुनिया को तहस–नहस कर दिया है। विश्व भर में करोड़ों जिंदगियां संकट का सामना कर रही हैं। सारी दुनिया जिंदगी बचाने में एक प्रकार से जंग में जुटी है। हमने ऐसा संकट न पहले कभी देखा था और न कभी सुना था। निश्चित तौर पर मानव जाति के लिए यह सब कुछ अकल्पनीय है। इस समय "थकना हारना, टूटना, बिखरना किसी को मंजूर नहीं है। सतर्क रहते हुए ऐसी जंग के सभी नियमों का पालन करते हुए, अब हमें बचना भी है और आगे भी बढ़ना है। आज जब दुनिया संकट में है तब हमें अपना संकल्प और मजबूत करना है। हमारा संकल्प इस संकट से ही विराट होगा। 21वीं सदी भारत की हो, यह हम सबका सपना ही नहीं जिम्मेदारी भी है। लेकिन इसका मार्ग एक ही है, आत्मनिर्भर भारत।

एक राष्ट्र के रूप में आज हम एक बहुत ही अहम मोड़ पर खड़े हैं. इतनी बड़ी आपदा भारत के लिए एक संकेत लेकर आई है, एक संदेश लेकर आई है, एक अवसर लेकर आई है। भारत की संस्कृति और भारत के संस्कार उस आत्मनिर्भरता की बात करते हैं जिसका मंत्र वसुधैव कुटुम्बकम है, जो पृथ्वी को मां मानती हो, वो संस्कृति, वो भारतभूमि, जब आत्मनिर्भर बनती है, तब उससे एक सुखी–समृद्ध विश्व की संभावना भी सुनिश्चित होती है। भारत की प्रगति में तो हमेशा विश्व की प्रगति समाहित रही है। हमें खुशहाल देशों की श्रेणी में भी आना है और अमीर देशों की श्रेणी में भी आना है । आज भारत खुशहाली के मामले में विश्व में 144वें स्थान पर है जो सोचनीय है।

हमारा सदियों का गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। भारत जब समृद्ध था तब सोने की चिड़िया कहा जाता था, सम्पन्न था, तब सदा विश्व के कल्याण की राह पर ही चला करता था। हर भारतवासी को अपने लोकल के लिए 'वोकल' बनना है, न सिर्फ लोकल उत्पाद खरीदने हैं, बल्कि उनका गर्व से प्रचार भी करना है। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारा देश ऐसा कर सकता है। मेरा विश्वास है कि "आत्मनिर्भर भारत का यह युग हर भारतवासी के लिए नूतन प्रण भी होगा, नूतन पर्व भी होगा। अब एक नई प्राणशक्ति, नई संकल्पशक्ति के साथ हमें आगे बढ़ना है।

आत्मनिर्भरता, आत्मबल और आत्मविश्वास से ही संभव है। आत्मनिर्भरता, ग्लोबल सप्लाई चेन में कड़ी स्पर्धा के लिए भी देश को तैयार करती है। अतः भारत का एक दिन समृद्ध बनना निश्चित है। मन समृद्ध तो तन समृद्ध, तन समृद्ध तो जीवन समृद्ध, जीवन समृद्ध तो देश समृद्ध।

लेख

कितना भी पकड़ लो, फिसलता जरूर है

आशुतोष कुमार आनन्द
वरि. प्रबंधक (मा.सं.–नीति), ऋषिकेश

हिंदी फिल्म का एक गाना है कि वक्त से कल और आज, वक्त से दिन और रात, वक्त की हर शै गुलाम, वक्त का हर शै पर राज, आदमी को चाहिए वक्त से डरकर रहे न जाने किस घड़ी, वक्त का बदले मिजाज़।

समय बड़ा बलवान होता है, भगवान राम को भी इसी समय ने वनवास दिया और कृष्ण जी को कारावास में जन्म। समय चलायमान है आज किसी के साथ कल किसी और के साथ। इस संदर्भ में एक छोटी सी घटना का जिक्र करना प्रासंगिक प्रतीत होता है। एक ऑफिस में एक नया कर्मचारी नौकरी ज्वॉइन करने आया। उसकी जीवन की पहली नौकरी थी इसलिए वो लड़का बड़ा उत्त्साहित था। उसने अपनी ज्वाइनिंग फॉर्मेलिटी पूरी की और अपने बॉस से मिलने चला गया।

उसका बॉस 50 साल का एक वरिष्ठ अधिकारी था, उसने उस लडके को बुलाया, बिठाया और फिर शुरू हो गया अपनी पृष्ठभूमि का बखान करने में, उसने ये किया, उसने वो किया, उसकी सब सुनते हैं, वो जो चाहे वही होता है, ऑफिस में इसलिए उसे भी उसकी हर बात माननी होगी। उस दिन के बाद कई मौकों पर उस अधिकारी ने उसका उपहास उड़ाया और उसे जूनियर होने का एहसास दिलाया। लड़का बेचारा उसकी सारी बातें सुनता रहा और अपना कार्य करता रहा।

चूँकि, लड़के को काम आता था एवं मेहनती था, इसलिए जल्दी ही उसने ऑफिस के बाकी कर्मचारियों के बीच पैठ और पहचान बना ली । एक दिन कंपनी के मालिक का आगमन हुआ ऑफिस में एवं उन्होने कहा कि कंपनी को एक नया प्रोजेक्ट मिल रहा है और वहां पर जो काम करना है उसके लिए जो अनिवार्य शैक्षणिक पृष्ठभूमि चाहिए, उसके लिए जो कर्मचारी अहर्ता रखते हों वो बताएं । संयोग से इस लड़के की शैक्षणिक पृष्ठभूमि कार्य की जरुरत से मेल खाती थी। अतः उसे उस काम के लिए वहां पदस्थापित कर दिया गया। समय बीतता गया और जब कार्य समय से पहले ही संपन्न हुआ तो कंपनी के मालिक ने उस लडके को सीनियर पोजीशन दे डाली और अब वही सीनियर अधिकारी जो उसे परेशान करता था, अब उसके अधीनस्थ काम कर रहा था। ये है समय । ऐसे कितने उदाहारण हैं इतिहास में, जहाँ समय ने करवट लेते हुए बड़े–बड़े शंहशाहों को खाक में मिला दिया और कितने खाक में मिले लोगों को फर्श से अर्श की ऊंचाई दी। लोग प्रधानमंत्री मोदी की पुरानी तस्वीरों और अबकी तस्वीरों को दिखाते हैं, जिनको देखकर ऐसा लगता है कि उस समय उनके साथ काम कर रहे लोगों ने शायद ही सोचा था कि यह व्यक्ति एक दिन प्रधानमंत्री बन जाएगा।

समय से परे कोई नहीं, अपितु भगवान भी इस समय के वश में हैं, तो हम इंसानों की क्या बिसात, इसलिए कभी व्यवहार में अहंकार का समावेश नहीं होना चाहिए। तूफान में कश्तियां और घमंड में हस्तियाँ अक्सर मिट जाती हैं, हर चीज़ जो ऊपर जाती है वो नीचे भी जरुर आती है, जब तक गुरुत्वाकर्षण का बल उससे खींचता है। इसलिए समभाव से जीने की कला सीखनी चाहिए। कोशिश करें कि दूसरों के साथ वह व्यवहार या आचरण न करें जिसे आप स्वयं के लिए पसंद नहीं करते। हम इंसानों की सबसे बड़ी खूबी है कि हम दूसरे की छोटी–मोटी गलतियों में बहुत जल्दी न्यायाधीश बन जाते हैं। हम खुद के लिए दूसरा पैमाना तय करते हैं और दूसरों के लिए कुछ और। पर समयचक्र बड़ा बलवान होता है, जिसने सिकंदर को भी खाली हाथ जाने को मजबूर कर दिया। इसलिए जब भी हम अपने से कमजोर या छोटे से व्यवहार करें तो ये भली–भांति याद रखें कि उनका समय भी कभी बदलेगा । समय की चक्की पीसती धीरे है पर पीसती बहुत बारीक है।

इसलिए सही कहा है किसी ने कि कितना भी पकड़ लो, फिसलता जरुर है, ये वक्त है साहब, बदलता जरुर है।

कायर आदमी अपनी मौत से पहले न जाने कितनी बार मरता है – **अज्ञात**

लेख

कोटेश्वर की भयावह रात

एस. के. चौहान
उप महाप्रबंधक (परिकल्प सिविल), ऋषिकेश

"पूस की एक शाम मैं छत पर बैठा हुआ क्षितिज की ओर टकटकी लगाए देख रहा था। दूर झील के उस पार चीड के वृक्ष एक दम निशब्द व निरवता में खड़े थे। सूर्य भी अपनी किरणें समेटने में जुटा हुआ था अनायास चहकती हुई चिड़ियों का झुंड उड़ता हुआ आया और देखते ही देखते आंखों से ओझल हो गया। हवा में शीतलता गहराने लगी यद्यपि मैंने दो–तीन ऊनी कपड़े पहने थे, तब भी हवा उन्हें भेदकर बदन को ठिठुरा रही थी। झील में डूबता सूरज बड़ा ही मनोरम लग रहा था। मानो अग्निदेव स्वयं ही झील में उतरकर शीत के एहसास को कम करने का प्रयास कर रहे हों। गदेरे के पास खड़े हो उतीश के वृक्ष की डालियों के हिलने से झील के झिलमिलाने का अप्रतिम एहसास हो रहा था। चीड़ के पेड़ों की टहनियों पर हवा की सरसराहट और तेज हो गई थी। आकाश में उड़ते पक्षियों के झुंड चहकते हुए वापस अपने घोंसले में लौटने लगे थे। अचानक धूल का बवंडर आसमान में भंवरे बनाकर आगे बढ़ता आ रहा था। धूल कुछ छटी तो गायों का झुंड नजर आया जो अपने घर को लौट रहा था। शाम अपने अंतिम पड़ाव पर थी। तभी तेज हवा का भंवर सामने की पहाड़ी पर टकराया और इसी के बाद सूरज भी अस्त हो चला। जैसे ही सूरज की किरणों ने शुभरात्रि कहा तो ठंड का एहसास और बढ़ गया। कल मां चंद्रबदनी की पहाड़ी पर बर्फबारी हुई थी। आसमान की ओर देखा तो चंद्रमा भी अपने साथ घेरा लिए हुए अग्रसर हो रहा था। ठीक ही किया जो बीती शाम गैस का चूल्हा ठीक करा लिया था, वरना खाने की समस्या हो गई होती। मैं अकेला प्राणी और उस पर विगत 6 वर्षों से हृदय रोगी, खाना नहीं बनता तो रेफ्रिजरेटर में जमा किए हुए अनार, कीवी, सेब व पपीते ही डिनर के भी काम आते। आखिर दवाईयां भी तो समय पर लेनी थी। शाम 6 बजे से सुबह 8 बजे तक आवागमन का कोई साधन नहीं था। विकसित कॉलोनी होने के बावजूद भी उंगलियों पर गिने जाने वाले परिवार ही यहां निवास करते थे। 90% स्टाफ तो भागीरथीपुरम कालोनी टिहरी में निवास करता था। मेरे निवास के साथ ही नवरंग क्लब का निर्माण कार्य गतिमान था। मैंने छत से उतरकर नीचे कमरे में आकर हीटर चलाया तो जान में जान आई। यहां रात्रि समय किसी आपातकाल में न तो कोई चिकित्सक उपलब्ध था और न कोई वाहन, बस सब कुछ ईश्वर की दया पर निर्भर था। मेरे दोस्तों ने भी मुझे कितनी बार समझाया था कि टिहरी में आवास आबंटन करा लूं, यहां खतरा है, परंतु मैं ठहरा ड्यूटी व काम के प्रति समर्पित व्यक्ति। जहां काम होगा वहीं निवास भी। अन्यथा भागीरथीपुरम कालोनी से रोज का आना–जाना हृदय रोगी के लिए सर्द मौसम में आसान नहीं था अतः मजबूरी में कोटेश्वर में ही डेरा डाले रहा।

अब आसमानी बिजली कौंधना शुरू हो चुकी थी। गड़गड़ाहट से ऐसा लग रहा था मानो संपूर्ण घाटी में रह–रहकर बम वर्षा हो रही हो। सन्नाटे और अंधकार में बिजली का कोंधना झील में एक ज्वालामुखी के उद्भव जैसा लग रहा था। नींद आंखों से कोसों दूर थी। सहसा मुझे गाय की चीख सुनाई दी। मैं तेजी से बिस्तर से उठा और अपने दूरगामी में फोकस वाली टॉर्च जलाकर खिड़की से देखा तो एक गुलदार एक गाय की गर्दन अपने पंजों में जकड़े था और गाय अपने को छुड़ाने की असफल कोशिश कर रही थी। दरअसल नवरंग क्लब के सामने सड़क पर एक छोटा सा समतल स्थान था जिस पर अक्सर गाय रात्रि विश्राम करती थी। कुछ देर बाद गाय की आवाज बंद हो गई और सुबह होने का इंतजार करने लगा। अन्य पर्वतीय कॉलोनियों की तरह यहां की कॉलोनी में चारदिवारी नहीं थी और कोई भी कभी भी

कॉलोनी में प्रवेश कर सकता था। गुलदार आस–पास गांव की बकरियां और कुत्ते चट कर चुका था और आज उसने गाय पर धावा बोला था। अचानक मूसलाधार बारिश शुरु हो चुकी थी और घड़ी सुबह के 3:30 बजा रही थी। रात मेरी करवट बदलकर ही गुजरी। नींद ना आने तक मैं गाता रहा।

हो सलोना मेरा सपना,
अमिय नींद की पिला दे प्रभु,
अब तो नींद सुला दे प्रभु,
भूल जाऊं मैं अंधेरा घना,
हो सलोना मेरा सपना।
सोते सुनूं मैं गाना ऐसा,
अब तक ना जग ने सुना हो जैसा,
सातों स्वरों को मिलाकर जैसे,
भक्तों का हरि भजन जपना,
हो सलोना मेरा सपना।

गाते–गाते नींद ने अंक में कब भर लिया, पता ही नहीं चला। सुबह "कूड़ा दे दो" की आवाज से जगा तो मोहन स्वच्छकार सामने था। दरवाजा खोला तो कहने लगा साहब रात में गुलदार ने गाय मार डाली और मुझे गाय को उठाकर जेसीबी पर चढ़ाना है। घनघोर बारिश के कारण गुलदार गाय को खा तो नहीं पाया और छोड़कर चला गया। मैं फटाफट तैयार होकर कार्यालय पहुंचा तो कार्यालय में यही चर्चा आम थी। कोटेश्वर महादेव के मंदिर में तैनात पुरुषोत्तम उस दिन कार्यालय में आया और कहने लगा आज दोपहर में आलू की सब्जी, मंडुवे की रोटी और दही का छसिया तैयार करूंगा, आप आइएगा जरूर। उस दिन का खाना क्या लजीज खाना था, वह आज तक स्वाद का जायका यादों में समाया है। मैं जब तक वहां रहा वह रात भुलाए नहीं भूली, बस कोटेश्वर महादेव का स्मरण कर–कर के समय गुजारा। आज जब भी मैं उस रात के बारे में सोचता हूं तो बदन सिहर उठता है।

डस रही थी रात काली नाग सी वो रात,
नींद आंखों से उड़ी थी वो घनेरी रात,
चांद छुपा बादल में लब पर थे जज्बात,
सर्द रातें फिर लौट आई शुरू हुआ हिमपात।

लघु कथा

पुरुषार्थ

सुरेश कुमार
वरिष्ठ टेक्नीशियन, टाउनशिप (सर्विसेज), ऋषिकेश

एक संपन्न व्यापारी को इस कोरोनाकाल के दौरान लॉकडाउन में अचानक इतना घाटा हुआ कि वह सड़क पर आ गया। वह अपनी दशा पर शोक की अवस्था में रहने लगा। एक रोज पास से गुजरते एक महात्मा ने उसकी दशा देखकर कहा, लगता है तुम्हें बड़ा आघात पहुंचा है। महात्मा की बात सुन व्यापारी बोला, हां महाराज मेरे जीवन की सारी कमाई चली गई। पहले बीमारी ने सताया फिर मौत ने रूलाया और व्यापार बंद पडा है, मैं कहीं का नहीं रहा। उसकी बात सुनकर महात्मा मुस्कुराकर बोले कि मुझे तो ऐसा नहीं दिख रहा है। तुम्हारे माथे की रेखाएं कहती है कि तुम एक सफल व्यक्ति बनोगे, बशर्ते कि तुम पुरुषार्थ से काम लो। तुम्हारा पैसा चला गया, परन्तु जिसके रहते तुमने वह सब कमाया था, वह तुम्हारा पुरुषार्थ तो तुम्हारे ही पास है न। अब तुम दोबारा मेहनत करो। सब वापस लौट आएगा। महात्मा की बात सुन व्यापारी पुनः परिश्रम करने लगा और देखते ही देखते उसका व्यापार फिर से फल फूल गया। इसलिए कहा गया है कि ईश्वर बड़ा कारसाज है।

धर्म

भारतीय संस्कृति में कलश का महत्व

(सौजन्य से – गुरूसेवा मंडली, मेरठ)

बी.पी.डोभाल
अभिलेख अधिकारी, मुख्य अभिलेख कार्यालय, ऋषिकेश

भारत में पूजा से पूर्व 'कलश' स्थापित किया जाता है। उसकी गरदन में बंधा धागा (कलावा) कल्याण और शुभ कार्य का सूचक होता है। यह मंगलमय आयोजनों में समाज को स्नेह सूत्र में बाँधने का परिचायक है। कलश को जल, वायु तथा सूर्य का प्रतीक मानते हैं। इसलिए कभी भी जलविहीन कलश नहीं रखना चाहिए।

हिंदू धर्म में प्रायः लोग विभिन्न त्यौहारों व पूजा–उपासना के समय कलश की स्थापना करते हैं। विशेष हवन, अनुष्ठान तथा नवरात्रि के दिनों में तो कलश की स्थापना विशेष रूप से की जाती है। कलश–हिंदू धार्मिक अनुष्ठान पद्धति का एक प्रमुख अंग है जिसे हिन्दू धर्म में देवताओं के तुल्य स्थान दिया गया है। विभिन्न मंदिरों में देवी–देवताओं की प्रतिमाओं के साथ ही कलश की स्थापना भी की जाती है, जिन्हें स्वर्ण एवं रजत पत्रों से सजाया जाता है। विभिन्न अलंकार एवं स्वास्तिक चिन्ह भी इस पर अंकित किए जाते हैं, लेकिन क्या आप भारतीय संस्कृति में कलश के महत्व से अवगत हैं?

यदि आप सनातन संस्कृति का गहन अध्ययन करें तो आपको ज्ञात होगा कि हमारे पूर्वज जीवन में सदैव भावना को ही प्रमुखता देते आए हैं क्योकि भावना के बदलते ही जीवन पद्धति व मान्यताएं भी बदल जाती हैं। पत्थर को सिंदूर लगाते ही भावना बदल जाती है और वही पत्थर हमारी दृष्टि में हनुमान बन जाता है। भावना जीवन है और भावशून्यता मृत्यु। हमारे पूर्वज सूर्य को सिर्फ एक आग का गोला नहीं, अपितु एक देवता समझकर उसकी आराधना करते आए हैं। वरुण को सिर्फ प्रकृति का एक रूप ही नही माना जाता, बल्कि उसकी देवतुल्य स्तुति की गई है। यह कलश वास्तव में उन्हीं वरुण देवता का प्रतीक चिन्ह है।

कलश भारतीय संस्कृति का अग्रगण्य प्रतीक है, इसीलिए सभी महत्वपूर्ण शुभ कार्य कलश को साक्षी मानकर किये जाते हैं। प्रत्येक शुभ कार्य के आरंभ में जिस तरह विघ्नहर्ता भगवान गणपति की पूजा की जाती है, ठीक उसी प्रकार कलश की भी पूजा होती है। भारतीय स्थापत्य शास्त्र में भी 'कलश' का अनोखा महत्व है। जहाँ मंदिर होगा, वहाँ कलश अवश्य होगा– वह कलश जो अंतिम लक्ष्य और पूर्णता का प्रतीक है। देवस्थान पर जाकर भगवान के दर्शन करने के पश्चात कलश के दर्शन न करने पर दर्शन अपूर्ण माना जाता है।

कलश मानव देह का भी प्रतीक है। शरीर पवित्र है, सुंदर है, दर्शनीय है किंतु कब तक? जब तक जीवनरूपी जल और प्राणात्मक ज्योति उसमें विद्यमान है। निष्प्राण शरीर तो मूर्तिहीन मंदिर के समान है। कलश का जल जिस तरह विशाल जलराशि का अंश है, उसी तरह देह रूपी कलश में बसी हुई जीवात्मा व्यापक चैतन्य का ही एक अंश है। भारतीय संस्कृति में फूल व जल से परिपूर्ण कलश की स्थापना पूजा–अर्चना इत्यादि सभी संस्कारों में की जाती है। पूजा–पाठ में भी कलश किसी न किसी रूप में स्थापित किया जाता है। कलश के मुख पर ब्रह्मा, गर्दन में भगवान शंकर, मूल में भगवान विष्णु तथा मध्य में मातृगणों का वास होता है। ये सभी देवता कलश में प्रतिष्ठित होकर शुभ कार्य संपन्न कराते हैं।

हमारे प्राचीन साहित्य में कलश की बहुत सराहना की गई है। मंगल का प्रतीक कलश अष्ट मांगलिकों में से एक है। जैन साहित्य में भी कलशाभिषेक का महत्वपूर्ण स्थान है। जो जल से सुशोभित है, वही कलश है। कलश की उत्पत्ति के विषय में अनेक कथाएँ

प्रचलित हैं जिसमें से एक समुद्र मंथन से संबंधित है जिसमें कहा गया है कि समुद्र मंथन से निकले अमृत को पीने के लिए विश्वकर्मा ने कलश का निर्माण किया था। मंदिरों में प्रायः कलश शिवलिंग के ऊपर स्थापित होता है जिसमें से जल की बूंदें निरंतर शिवलिंग पर गिरती रहती है।

रामायण में बताया गया है कि श्रीराम का राज्याभिषेक कराने के लिए राजा दशरथ ने सोने के सौ कलशों की व्यवस्था की थी। जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक कलश का उपयोग अनेक रूपों में किया जाता है। भारतीय संस्कृति में भिन्न–भिन्न सांस्कृतिक कार्यों में कलश को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। जीवन के हर क्षेत्र में धार्मिक कार्य का शुभारंभ मंगल कलश स्थापित करके ही किया जाता है। छोटे अनुष्ठान से लेकर बड़े–बड़े धार्मिक कार्यों में कलश का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार कलश भारतीय संस्कृति का वह शुभ प्रतीक है जिसमें समस्त मांगलिक भावनाएँ निहित होती हैं।

लघु कथा

कोरोना काल में अपने-अपने दुख

सुरेश कुमार
वरिष्ठ टेक्नीशियन, टाउनशिप (सर्विसेज), ऋषिकेश

एक अत्यधिक परेशान व्यक्ति परमात्मा से अपने दुख खत्म करने की प्रार्थना करता था पर उसकी सुनवाई नहीं हो रही थी। एक दिन उसने प्रार्थना करते हुए परमात्मा से कहा कि उसे जो दुख मिले हैं वह दूसरों के दुखों से कहीं ज्यादा है, इसलिए हे प्रभु, यदि मेरे दुख खत्म नहीं हो सकते तो किसी दूसरे कम दुख वाले से ही मेरे दुख बदल दो, उस रात उसे स्वप्न में परमात्मा की आवाज सुनाई पड़ी कि तुम अपने दुखों का बंडल बनाकर नगर के चौराहे पर आओ। उस व्यक्ति ने खुशी–खुशी अपने दुखों का बंडल तैयार किया और चौराहे की ओर दौड़ा। वहां उसने देखा कि उसी की तरह अनेक व्यक्ति अपने–अपने हाथों में बंडल लिए वहां खड़े थे। वह तनिक निराश हुआ। तभी चौराहे पर आवाज आई कि सामने दीवार पर हजारों खूंटियां लगी है। तुम सब अपने–अपने बंडल अलग–अलग खूंटियों पर बांध दो। यह सुनते ही सब दौड़ पड़े कि कहीं ऐसा न हो कि कोई भी खूंटी खाली ना मिले। ऐसा होने पर वे अपने दुखों के बंडल से मुक्त नहीं हो पाएंगे परंतु वहां पर्याप्त खूटियां थी। अपने–अपने बंडलों से निजात पाकर सब लोग वापस चौराहे पर आकर खड़े हो गए।

तब फिर आवाज आई, अब तुम अपने दुखों के बंडलों के बदले दीवार पर लटके तमाम बंडलों में से अपनी मर्जी से कोई भी एक बंडल उठा लो और स्थान खाली करो। अब उस तंग हर व्यक्ति को अचानक खूंटियों पर लटके दूसरों के तमाम बंडल अपने बंडल से बड़े और भारी नजर आने लगे। बहुत देर तक असमंजस में रहने के बाद अंत में उसने अपना ही बंडल उठा लिया। उसने सोचा मेरे दुख मेरे अपने हैं और कम से कम मैं उनका अभ्यस्त हो गया हूं और उनका निवारण भी कर सकता हूं। उनको यह समझ में आ गया कि अपना दुख और दूसरे का सुख दूर से सबको बड़ा ही लगता है, परन्तु उसके अंदर क्या छुपा है, यह दिखाई नहीं देता। उसका कारण हमारे मन में बैठा असंतोष है।

व्यंग्य

सड़कों की रूपरेखा

अनामिका आशा बुडाकोटी "अवनि"
प्रबंधक (सामा.एवं पर्या.), ऋषिकेश

हमारा देश विभिन्नताओं का देश है। यहां अलग–अलग संस्कृति, रंगों, भाषाओं, वेशभूषाओं आदि का मेल आसानी से देखने को मिल जाता है। यह तो थी प्रस्तावना.....लेकिन आश्चर्य की बात तो यह है कि प्रगति की ओर बढ़ते हुए हमारे देश में सड़कों की रूपरेखा भी अलग–अलग शहरों की तरह ही एक दूसरे से भिन्न है। अब ऋषिकेश की ही बात ले लीजिए। जी हाँ "ऋषिकेश योग नगरी" जहां देश विदेश के पर्यटक प्राय: घूमने आते हैं, आध्यात्मिक शिक्षा लेने आते हैं।

अब जान लेते हैं कि योग नगरी क्यों कहा जाता है? देखिए! जितना छोटा सा ये क़स्बा है, उतनी ही ज्यादा यहां गलियां और उतनी ही ज्यादा छोटी–छोटी सड़कों का जाल, जिनमें पड़े है छोटे–बड़े गड्ढे। ऋषिकेश में रहने वाले तो सुबह–शाम, दिन में सड़कों पर योग करते हुए ही नज़र आते हैं। जब भी हमें ऋषिकेश भ्रमण के लिए किसी भी वाहन से जाना होता है, हम इन्हीं सड़कों में उछलकूद करके जाते हैं। दो पहिए वाले वाहनों को तो इन गड्ढों में जाने के लिए बैलेंस चाहिए। कभी गड्ढे के इधर कभी गड्ढे के उधर और अगर बैलेंस बिगड़ा तो गए गड्ढे के अंदर। तो बैलेंस प्रैक्टिस के लिए ऋषिकेश की सड़के हैं "उत्तम"। साथ में सड़कों में बने है अजीब से बड़े–बड़े स्पीड ब्रेकर जो पूरे शरीर का वर्क आउट करवा देते हैं। अब देखिए, आलसी भी यहां चुस्त नज़र आता है, मज़बूरी में बाहर तो निकलना ही पड़ेगा और बाहर निकले तो वर्क आउट तो करना ही पड़ेगा।

लेकिन इन सबसे कॉन्फिडेंस लेवल भी सबका कुछ ज्यादा ही ऊपर हो गया है। गाड़ियां भी फुर्र भागती हैं और दो पहिये वाले वाहनों का तो क्या कहना। इतना एडवेंचर तो कहीं और देखने को नहीं मिलेगा। इन सड़कों में भी एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ रहती है। "डर" तो कहीं नदी में बह गया है। अब कल की ही बात ले लें, एक दिल्ली निवासी आया था, ऋषिकेश के भ्रमण के लिए। अब दिल्ली वाले तो दिल्ली वाले ही हैं, आते या तो हवाई जहाज या फिर कार से हैं। पहाड़ों और नदियों का प्रेम उन्हें खींच लाता है। ऋषिकेश के गलियारों में बड़े–बड़े शहरों की मलाई जैसी सड़कों से बाहर, धूल मिट्टी वाली दुनिया से दूर। वे शांत और साफ–सुथरे वातावरण को ज्यादा पसंद करते हैं। लेकिन वे भूल जाते हैं कि यह कस्बा साहसी खेलों के लिए भी प्रसिद्ध है। बार–बार भूलने की आदत है तो कहां थे हम ... हां, तो हुआ यूं कि दिल्ली वाले भाई साहब आ रहे थे अपनी बड़ी सी कार में, ब्रेकर्स से होते हुए, झटके खाते हुए और ठीक अचानक से उनके दाहिने तरफ से एक स्कूटर तेजी से आगे बढ़ते हुए उनकी कार से हल्का सा बचते हुए आगे निकला और गुस्से में अचानक रुका। यह देखते हुए कार ने भी अचानक ब्रेक लगाया। स्कूटी वाला बोलता है कि क्या है, दिखता नहीं है क्या? अगर मुझे लग जाती तो मैं तेरा ऐसा हश्र करता कि तू देखता रह जाता। अब दिल्ली वाला भी सोचने में लग जाता है कि यार गलती उसकी और फिर भी टशन इतना। बड़े शहर के लोगों को तो 4–6 लेन में चलने की आदत है, उन्हें कहां दाएं–बाएं का पता है।

खैर, तो विचार करने वाली बात तो यह है कि अगर लग जाती तो वो कैसा हश्र करता भाई ? एक्सीडेंट होने पर या तो वो हॉस्पिटल में रहता या फिर राम–राम हो जाता। फिर भी बंदे का आत्मविश्वास देखिए गजब का। तो कमाल है न सड़कों का।

जो ध्यान योग करते हैं, वे तो शांत हैं, हर परिस्थिति में भी रहकर खुश रहते हैं। यहां अब किसी को फर्क भी नहीं पड़ता। गलियों में भी जो बड़े–बड़े पिट्स बने हुए हैं, उनको भी बड़े अवसर के रूप में देखते हुए हर तरह के स्टंट करने को तैयार रहते हैं। बेचारे आलसी लोग, बेबस लोग जो कुछ नही कर पाते वो इन्हीं सड़कों को कोसते रहते हैं। आखिर यही तो वो सड़कें है, जो वर्क आउट करवाती हैं। तो कोसेंगे ही। तो आप भी सड़कों का फायदा उठाइए और स्वस्थ रहिए।

यात्रा–वृतांत

मां विंध्यवासिनी मंदिर दर्शन

नीलम चमोली,
शिक्षिका एवं समाज सेविका, पत्नी श्री राजेश चमोली,
वरि. प्रबंधक, ऋषिकेश

अभी हाल ही में सपरिवार ऋषिकेश के समीप व गंगा भोगपुर/चीला के पास उत्तराखंड में स्थित मां विंध्यवासिनी सिद्धपीठ के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। 01 नवंबर, 2020 को सुबह के 08:00 बजे हमने मंदिर के लिए प्रस्थान किया। सर्वप्रथम ऋषिकेश एम्स के पास स्थित पशुलोक बैराज से चीला–हरिद्वार मार्ग से होते हुए चीला नहर के किनारे–किनारे खूबसूरत प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेते हुए हम चलते जा रहे थे। चारों तरफ हरे भरे पेड़ और उनके बीच से छन–छन कर आती सूर्य की किरणें अप्रतिम छटा बिखेर रही थी। मनोरम दृश्य का आनंद लेते हुए हम पहुंचते हैं, कौड़िया गांव। यहाँ से यह मार्ग दो भागों में बंट जाता है। एक मुख्य मार्ग तो हरिद्वार/नजीबाबाद को तथा दूसरा बायीं ओर मुड़ने पर किमसार व ताल की ओर जाता है। कौड़िया गांव को पार करते ही हम वन विभाग के चेकपोस्ट के पास से ही मंदिर की तरफ बायीं ओर को जाने का रास्ता पकड़ लेते हैं। यह रास्ता कच्चा तथा घने जंगलों से होकर गुजरता है। रास्ते में पड़ने वाली बीन नदी जो कि कई जगह पार करनी होती है कल–कल करती हुई इस प्रकार बह रही थी मानो अपनी ही मस्ती में कोई गीत गुनगुना रही हो। चूंकि यह समस्त क्षेत्र राजा जी नेशनल पार्क का ही हिस्सा होने से इस रास्ते में जंगल के साथ–साथ कई बार जंगली जानवरों जैसे हिरण, जंगली सूअर, हाथी, मोर आदि से भी मुलाकात हो जाती है। रास्ते के दोनों किनारे पर लगी जंगली बेर की बड़ी–बड़ी झाड़ियां हैं, जो कि अक्टूबर से दिसंबर के दौरान जंगली बेर से लदी हुई रहती हैं, जो बेहद खूबसूरत नजर आती हैं। इस मार्ग पर चारों और पहाड़, नदी, जंगल से परिपूर्ण प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेते हुए, अचानक हम ऐसी जगह पहुंच जाते हैं जहां से लगता है कि सभी दरवाजे खुले पड़े हैं। शहर से दूर भीड़–भाड़ से परे शांत, सहज, सरल जीवन है, जो हमारा स्वागत करने के लिए खड़ा है। हम एक सम्मोहन से घिरने लगते हैं और पहुंच जाते हैं अपने पड़ाव पर।

उत्तराखंड में ऋषिकेश व हरिद्वार के मध्य घने जंगल तथा पहाड़ों में मां विंध्यवासिनी मंदिर एक प्रसिद्ध सिद्ध पीठ के नाम से जाना जाता है। यह मन्दिर हरिद्वार से लगभग 25 किलोमीटर दूर उत्तर की ओर तथा ऋषिकेश से लगभग 20 किलोमीटर दक्षिण की ओर नील पर्वत व कजरी वन के मध्य में मणिकूट पर्वत पर स्थित है। मणिकूट पर्वत के नीचे चाँदी सी चमकती ताल नदी जो आगे जाकर बीन नदी के नाम से जानी जाती है, बहती हुई बहुत ही सुंदर लगती है। प्रकृति का बहुत अद्भुत सुंदर रूप नजर आता है। मंदिर तक पहुंचने के लिए पहले साढ़े 400 सीढ़ियां हुआ करती थी किंतु वर्तमान में वहां पर ढ़ालदार सीमेंट का पैदल रास्ता बना दिया गया है। चढ़ाई चढ़ते हुए हम मंदिर तक पहुंचते हैं। मंदिर से नीचे देखते हैं तो सीढीनुमा खेत और दूर–दूर तक फैले घने जंगल व पहाड़ मन को मोह लेते हैं। अप्रतिम दृश्य नजर आता है।

मंदिर में माता के दर्शन का पुण्य लाभ प्राप्त करने के पश्चात हमने मंदिर में रह रहे पुजारी श्री सुभाष दास जी एवं श्री जयराम दास जी से बात की तो उन्होंने बताया कि इस मंदिर के संस्थापक हैं बाबा हरिद्वारी लाल जी। बाबा हरिद्वारी लाल जी के द्वारा घोर तपस्या के पश्चात मां विंध्यवासिनी देवी ने इसी स्थान पर दर्शन दिए थे। इसलिए यहीं पर माता का मंदिर स्थापित किया गया है।

बाबा हरिद्वारी लाल जी को गौरी बाबा भी कहा जाता है। शायद इसी नाम पर इस जगह का नाम गौरी घाट रखा गया होगा।

मान्यता है कि इस सिद्ध पीठ में जो भी सच्चे मन से कुछ भी मांगता है उसकी मनोकामना शीघ्र पूर्ण हो जाती है। श्रीमद्भागवत कथा के अनुसार देवकी के गर्भ से जन्मे श्री कृष्ण को बचाने के लिए वासुदेव जी ने यमुना नदी को पार करके गोकुल में यशोदा के घर पहुंचा दिया था और वहां से यशोदा की बेटी योग माया को चुपचाप उठाकर ले आए थे। जैसे ही कंस योग माया को देवकी का आठवां पुत्र समझकर मारने लगा तो वह उसके हाथ से छूटकर आसमान की ओर चली गई और आकाशवाणी हुई कि हे कंस तुझे मारने वाला तो गोकुल में जन्म ले चुका है। मान्यता के अनुसार मां विंध्यवासिनी को ही योगमाया का अवतार माना जाता है। महाभारत के विराट पर्व में धर्मराज युधिष्ठिर ने देवी की स्तुति करते हुए कहा था "विंध्याचले श्रेष्ठे तव स्थानहि शाश्वतम" अर्थात हे माता पर्वतों में श्रेष्ठ पर्वत विंध्याचल पर्वत पर आप विराजमान रहती हैं।

मार्कंडेय पुराण के अंतर्गत वर्णित दुर्गा सप्तशती के ग्यारहवें अध्याय में देवताओं के अनुरोध पर मां भगवती द्वारा ही शुंभ व निशुंभ नामक दानवों का वध किया गया था। विंध्याचल पर्वत पर निवास करने के कारण देवी का नाम विंध्यवासिनी देवी पड़ा। देवी ने अपने जन्म के बाद विंध्याचल पर्वत को ही अपने निवास स्थान के रूप में चुना।

अध्यात्म एवं प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण यह स्थान आपको अवश्य ही मंत्रमुग्ध कर देगा। मंदिर तक पहुंचने के लिए आप ऋषिकेश/हरिद्वार से बस, ट्रैकर, कार या बाइक द्वारा आसानी से पहुंच सकते हैं। माँ भगवती आपकी मनोकामना पूर्ण करे

""""जय माता दी।""""

प्रेरक

सुंदर चेहरा और सुंदर व्यवहार

पी.एस.चौधरी
वरिष्ठ प्रबंधक(संविदा), ऋषिकेश

एक सभा में गुरु जी ने प्रवचन के दौरान एक 30 वर्षीय युवक को खड़ा कर पूछा कि "आप मुम्बई में जुहू चौपाटी पर चल रहे हैं और सामने से एक सुंदर लड़की आ रही है, तो आप क्या करोगे"? युवक ने कहा–उस पर नजर जाएगी, उसे देखने लगेंगे। गुरु जी ने पूछा–वह लड़की आगे बढ गई, तो क्या पीछे मुड़कर भी देखोगे? लड़के ने कहा–हाँ, अगर धर्मपत्नी साथ नहीं है तो (सभा में सभी हँस पड़े)। गुरु जी ने फिर पूछा–जरा यह बताओ वह सुन्दर चेहरा आपको कब तक याद रहेगा? युवक ने कहा 5–10 मिनट तक, जब तक कोई दूसरा सुन्दर चेहरा सामने न आ जाए।

गुरु जी ने उस युवक से कहा–अब जरा कल्पना कीजिये। आप जयपुर से मुम्बई जा रहे हैं और मैंने आपको एक पुस्तकों का पैकेट देते हुए कहा कि मुम्बई में अमुक महानुभाव के यहां यह पैकेट पहुंचा देना.. आप पैकेट देने मुम्बई में उनके घर गए। उनका घर देखा तो आपको पता चला कि ये तो बड़े अरबपति हैं। घर के बाहर 10 गाड़ियां और 5 चौकीदार खड़े हैं। उन्हें आपने पैकेट की सूचना अंदर भिजवाई, तो वे महानुभाव खुद बाहर आए। आपसे पैकेट लिया। आप जाने लगे तो आपको आग्रह करके घर में ले गए। पास में बैठाकर गरम खाना खिलाया। चलते समय आपसे पूछा–किसमें आए हो? आपने कहा–लोकल ट्रेन में। उन्होंने ड्राइवर को बोलकर आपको गंतव्य तक पहुंचाने के लिए कहा और आप जैसे ही अपने स्थान पर पहुंचने वाले थे कि उस अरबपति महानुभाव का फोन आया–भैया, आप आराम से पहुंच गए.. अब आप बताइए कि आपको वे महानुभाव कब तक याद रहेंगे ? युवक ने कहा–गुरु जी! जिंदगी में मरते दम तक उस व्यक्ति को हम भूल नहीं सकते।

गुरु जी ने युवक के माध्यम से सभा को संबोधित करते हुए कहा "यह है जीवन की हकीकत"। सुंदर चेहरा थोड़े समय ही याद रहता है, पर सुंदर व्यवहार जीवन भर याद रहता है।" बस यही है जीवन का गुरु मंत्र "अपने चेहरे और शरीर की सुंदरता से ज़्यादा अपने व्यवहार की सुंदरता पर ध्यान दें, जीवन अपने लिए आनंददायक और दूसरों के लिए अविस्मरणीय प्रेरणादायक बन जाएगा"।

श्रद्धा सुमन

डॉक्टर ! यू कैन डू इट

आर. पी. रतूड़ी
वरिष्ठ प्रबंधक (कारपोरेट नियोजन) ऋषिकेश

वे अक्सर मुझे डॉक्टर कहकर बुलाया करते थे। जब भी उनसे मुलाक़ात होती, वे अपनी चिर–परिचित मुस्कान के साथ कहते'... आओ डॉक्टर रतूड़ी, कैसे हो...' और कहकर बच्चों जैसी खिलखिलाहट के साथ हँसते। उनकी वो मुस्कान और खिलखिलाहट हमेशा बरकरार रही, यहाँ तक कि जब वे गंभीर रूप से अस्वस्थ थे, यहाँ तक कि... मृत्यु पर्यन्त।

अतुल पोरवाल जी से मेरी मुलाक़ात शायद 2003–04 के आस–पास हुई थी, जब वे टिहरी से स्थानांतरित होकर कारपोरेट प्लानिंग विभाग के कॉस्ट इंजीनियरिंग एवं न्यू प्रोजेक्ट्स विंग में आए थे। उन्हीं दिनों मेरा भी स्थानांतरण टिहरी से वाणिज्यिक विभाग, ऋषिकेश में हुआ था और वे कभी–कभार वाणिज्यिक विभाग में आया करते थे। संयोगवश कुछ समय बाद मेरा स्थानांतरण भी कारपोरेट प्लानिंग विभाग में उन्हीं के अधीन हो गया। पोरवाल जी के हंसमुख स्वभाव के चलते कुछ समय में ही उनके साथ बहुत अच्छी ट्यूनिंग हो गई। इसके बाद हमने साथ मिलकर बहुत काम किया। टिहरी एचपीपी का रिवाइज्ड कॉस्ट एस्टीमेट, ढुकवां, उत्यासु, किशाऊ, संकोश, नई परियोजनाओं आदि से संबंधित बहुत सा काम हमने साथ मिलकर किया। शायद यह बहुत बड़ी बात न हो पर हम इस हद तक काम में डूबे रहते कि लंच के समय भी काम ही करते रहते। कभी खाना ऑफिस में ही मंगवा लेते, कभी बाहर जाकर खाते या कभी चाय और सूखे समोसे (फैन) से ही काम चला लेते जो कि उन्हें बहुत पसंद थे।

वे मुझे डॉक्टर कहकर बुलाते थे। उनको लगता था मैं कुछ भी कर सकता हूँ, बल्कि ये कहना ज्यादा सही होगा कि वे मुझसे कुछ भी करवा लेते थे। वे मुझसे अक्सर कहते ...'डॉक्टर! यू कैन डू इट...मुझे पता है तू कर लेगा...' और वाकई में ऐसा हो भी जाता, बल्कि वे करा लेते थे। ये उनकी जादूगरी थी। उनके साथ काम

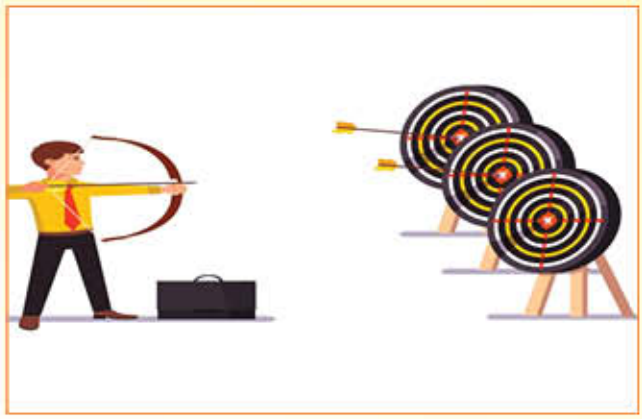

करते हुए मुझे अपनी ही उन क्षमताओं को जानने का मौका मिला जिनसे मैं खुद ही अपरिचित था। जहाँ तक मैंने उनके साथ काम करते हुए महसूस किया, उनका नेतृत्व और काम करने की क्षमता जादुई सी थी। उनका बेपरवाह सा स्टाईल था लेकिन दिमाग उतना ही तेज था। किसी भी काम का खाका उनके दिमाग में स्पष्ट रहता जिसे वे मुझसे साकार करवा लेते। सच कहूं तो आज कंप्यूटर पर जितना भी काम मैं कर सकता हूँ, उसे तराशने वाले पोरवाल जी ही थे। ख़ास तौर पर एक्सेल में काम करना, प्रेजेंटेशन बनाना, एनीमेशन बनाना और कंप्यूटर पर करने वाले बहुत से प्रयोग और काम उनसे ही सीखे। जिस गूगल अर्थ को मैं सिर्फ जगह देखने के लिए इस्तेमाल करता था, उसी गूगल अर्थ पर उन्होंने मुझसे कई परियोजनाओं के कंटूर मैप्स बनवाए। वास्तव में मुझे खुद ही पता नहीं था कि मैं ये काम भी कर सकता हूँ क्योंकि हर बार कोई नई चीज वो करने को कहते और मुझसे करवा भी लेते। उनका अपने ही द्वारा घोषित इस डॉक्टर पर इस कदर विश्वास था कि जब उन्हें अपनी बेटी की सगाई के लिए म्यूजिकल इनविटेशन कार्ड बनवाना था तो किसी प्रोफेशनल को कहने के बजाए उन्होंने मुझे ही फोन किया और कहा इसे तुम बनाओ। मेरे लिए ये बहुत अप्रत्याशित भी

था और असंभव भी क्योंकि इस काम को प्रोफेशनल फोटोग्राफर करते हैं और इसके लिए विशेष सॉफ्टवेयर भी चाहिए। मैंने उनसे कहा भी कि ये काम मैं कैसे कर सकता हूँ, मुझे तो इसकी कोई जानकारी ही नहीं है। लेकिन उनका फिर वही सुपरिचित डायलॉग था ...'डॉक्टर! यू कैन डू इट...मुझे पता है तू कर लेगा...' जो काम कभी किया नहीं, जिसका पता नहीं, जिसके संसाधन नहीं, फिर भी वो करना ही था क्योंकि उन्हें विश्वास था कि उनका ये स्व–घोषित डॉक्टर इसे कर लेगा और फिर वही हुआ जो उनके दिमाग में था। दो–तीन प्रयासों के बाद जब फाइनल वीडियो बना तो वो बहुत खुश हुए और मुझे भी सुकून मिला कि उनका डॉक्टर उनके सामने फेल नहीं हुआ। सीमित संसाधनों के बावजूद उनके नेतृत्व में हमने मिलकर ऐसे बहुत से काम किए जो मेरे लिए तो कम से कम बिलकुल नए प्रयोग थे। हमने का तात्पर्य मेरा उनके नेतृत्व में कार्य करने से है और हमने कहने का अधिकार भी उन्हीं का दिया हुआ है। पोरवाल जी होम्योपैथी की भी गहन जानकारी रखते थे जो कि संभवतः उनके पिता से उन्हें विरासत में मिली थी। जिन दिनों मैं घुटनों की गंभीर समस्या से जूझ रहा था, वे मुझे होम्योपैथिक दवाइयां बताया करते थे जिनसे मुझे आराम मिलता। तब अपने ही डॉक्टर के लिए वो खुद डॉक्टर बन जाते। उनके साथ काम करते हुए या मिलते हुए कभी ये एहसास नहीं हुआ कि किसी बड़े अधिकारी के अधीन काम कर रहा या मिल रहा हूँ। वे हमेशा दोस्ताना सा माहौल बनाए रहते जिसमें न पद का अहम होता, न झूठे सम्मान की अपेक्षा। मेरे लिए उनके पास हमेशा वक्त रहता। वो हमेशा गर्मजोशी से स्वागत करते। कभी यह नहीं कहा कि वो व्यस्त हैं या मिल नहीं सकते। शायद ये सिर्फ मेरा ही नहीं, ऐसे बहुत से लोगों का अनुभव होगा जो उनसे परिचित रहे होंगे।

हालांकि, पिछले कुछ सालों से पोरवाल जी गंभीर रूप से अस्वस्थ थे लेकिन जब भी उनसे मुलाकात होती वो अपनी चिर–परिचित मुस्कान के साथ कहते'... आओ डॉक्टर रतूड़ी, कैसे हो...' और खिलखिलाते, मुझे पता होता था वो अपना दर्द छुपा रहे हैं। वो अक्सर कहते, डॉक्टर तू मेरे पास आ जा, मेरा भी काम आसान हो जाएगा, तू संभाल लेगा। दिल से मैं भी चाहता था लेकिन ये मेरे हाथ में नहीं था। उनका यह कहना कि तू संभाल लेगा, उनका भ्रम था या उन्हें खुद के जादू पर विश्वास था, पता नहीं। लेकिन इतना मुझे पक्का पता था कि उनके मन में मेरे लिए अच्छी सोच थी और वे मेरे लिए कुछ बेहतर करना चाहते थे। शायद अंदर ही अंदर उन्हें अपने जाने का एहसास होने लगा था। कुछ दिन पहले जब उनसे मुलाकात हुई तो वे कुछ भावुक से हो गए। जीवन में पहली बार उनको भावुक होते देखा तो मैं भी भावुक हो गया और कुछ पलों के लिए हम चुपचाप बैठे रहे। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था कि पोरवाल जी के साथ बैठे हों और एक पल की भी गंभीरता या खामोशी हो। अभी कुछ दिन पहले ही विभागीय कार्य के संबंध में उनको फोन किया तो छूटते ही बोले... आ जा डॉक्टर... लेकिन मैं उनके पास जा नहीं पाया। उनका ये डॉक्टर इस बात को भांपने में चूक गया कि ये उनसे आखिरी वार्तालाप था।

पोरवाल जी मेरे लिए बड़े भाई के समान थे। उनका असमय जाना मेरे लिए व्यक्तिगत क्षति है। बड़े भाई आप ताउम्र दिल में रहेंगे। काश कि आपका बनाया ये बेकार का डॉक्टर भले कुछ न कर पाता बस वो डॉक्टर बन पाता जो आपका जीवन बचा लेता। आप थे तो आपके इस डॉक्टर को खुद की काबिलियत का भ्रम भी बना हुआ था। आप चले गए तो ये भ्रम टूट गया। आपका ये डॉक्टर फेल हो गया। आपके साथ ही आपके इस डॉक्टर की पदवी भी चली गई। अब कोई नहीं कहेगा.. .'डॉक्टर! यू कैन डू इट...'।

अपने को संकट में डालकर कार्य संपन्न करने वालों की विजय होती है, कायरों की नहीं – **जवाहरलाल नेहरू**

शिक्षा

किस क्षेत्र/परिवार के लोग श्रेष्ठ पुरुष होते हैं।

विष्णु भूषण मिश्रा
उप अधिकारी (कार्या. प्रशा.), ऋषिकेश

आलस्य से धीरे–धीरे दरिद्रता का जन्म होता है, आलसी व्यक्ति को गूढ़ विद्या की प्राप्ति नही होती। उसका जीवन यापन अविद्या के अन्धकार में ही होता है। निरंतर अत्यंत आराम चाहने वाले में आलस्य का अंकुरण होता है। उसे किसी भी प्रकार से किसी भी प्रकार की विद्या नही प्राप्त होती। विद्या ही देश–विदेश, लोक–परलोक में धन व प्रकश देती है। आराम की महति इच्छा रखने वाले कर्मविहीन मानव को आलस्य घेरता है और धीरे–धीरे मलीनता कुचैली की रीढ़ मजबूत होती है। आइए! हम कुचैली पर कुछ प्रकाश डालते हैं, जो स्वानुभूत हैं। कुचैली होना एक जघन्य अपराध है इसलिए इसके मूल को तुरंत समाप्त करना है, नहीं तो जीवन गर्त में जाकर जीव को किसी भी प्रकार से कल्याण पथ पर नहीं ले जाता और वह दीन–हीन होकर अपना नारकीय जीवन–यापन करता है। इसलिए मनुष्यों सतर्क हो जाओ।

कुचैलिनं दंत मलोपधारिणं जिह्वा सिनं निष्ठुर भाषिणं च। सूर्योदये चास्तमिते शयानं लक्ष्मी स्वयं विमुच्यति यदि चक्रपाणि।। दांतों में गंदगी रखने वाले, जिह्वा साफ न रखने वाले, निष्ठुर भाषी, कुचैली व्यक्ति सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सोते रहने वाले, ऐसे कुचैली के घर में यदि चक्रपाणि भगवान विष्णु लक्ष्मी जी को रहने के लिए बाध्य करते हों तो भी लक्ष्मी जी नारायण का कहना न मानकर सदा के लिए कुचैली के घर को छोड़कर चली जाती हैं। इसलिए कुचैली में पाए जाने वाले लक्षणों को सदा के लिए त्यागना होगा। लक्ष्मी जी जहां रहतीं हैं, वहां सर्वसम्पन्नता रहती है। दरिद्रता और कलह नहीं रहती। गुरुवो यत्र पूज्यंते यत्राहवानं सुसंस्कृतम् । अदंतो कलहो यत्र तत्र शक्रवसाम्यहम्।। लक्ष्मी जी ने कहा, हे इन्द्र जिस घर में गुरुजनों का सत्कार होता है, अन्य जनों के साथ सभ्यतापूर्वक बात की जाती है, जहां मुंह से बोलकर कोई कलह नही करता, मैं वहीं रहती हूं।

कुचैली किस स्थिति में कहां नही होते हैं, इसे भी ध्यान से जाने। केवल माने नहीं बल्कि यथास्थिति से स्वयं देखें तो आप पाएंगे कि अवश्य ही ऐसा ही है।

ये उप्तिं न्यग्रोधं कपित्थं जम्बु चंदनम्। पंचपल्लव पिचमिन्दु तद् गृहे नहिं कुचैलिनः।। अर्थात वट, कपित्थ, जामुन, चंदन, पंचपल्लव, नीम के वृक्षों को लगाने वालों के यहां कुचैली नही होते हैं। ये उप्तिं आम्र रुद्राक्षं मंदार पनसः वटः। निम्ब पाकर औदुम्बरि तद् गृहे न कुचैलिनः।। अर्थात आम, रुद्राक्ष, मंदार, कटहल, बरगद, नीम, पाकर, गूलर के पेड़ों को लगाने वालों के यहां कुचैली नही होते हैं। पारिजात खैर वंसू: अशोकं ढाकं कुशम्। तुलसी दूर्वा उप्तिं ये तत् गेहे न कुचैलिनः।। अर्थात पारिजात, खैर, बांस, अशोक, ढाक, कुश, तुलसी और दूब को लगाने वाले व्यक्ति के घर में कुचैली नही होते हैं। रम्भाम्रामलकं चिंचणी अपामार्ग वा। शमीं कनेर उप्तिं ये तत् गेहे न कुचैलिनः।। अर्थात केला, आंवला, आम, इमली, अपामार्ग, शमी और कनेर को लगाने वाले व्यक्ति के घर में कुचैली नही होते हैं।

सत्यव्रतं ब्रह्मचर्यं अहिंसा परहिते रता। सदा नम्र मृदुभाषी ये तत्गेहे न कुचैलिनः।। अर्थात सत्य बोलने वाले, ब्रह्मचर्य, अहिंसा का पालन करते हुए सदा परोपकार में लगे रहने वाले, सदा नम्र मृदुभाषी गुणों से युक्त पुरुष के यहां कुचैली नही होते हैं। आदित्यं गणनाथं च देवीं रुद्रं च केशवम्। यद् ग्रहे अर्चना नित्यं तद् गृहे न कुचैलिनः।। अर्थात सूर्य, गणेश, देवी, रुद्र और केशव की जिस घर में नित्य पूजन पाठ होता है तो उस घर में कुचैली नही होते हैं। गुरु धेनु अतिथि सेवा संत विप्र पितरौ तथा। वंश अश्वस्थ वटं अर्चं तत् गेहे न कुचैलिनः।। अर्थात गुरु, गाय, अतिथि, संत, विप्र, और माता पिता की सेवा तथा बांस, पीपल, बरगद की सेवा या पूजन जिस घर में होता है वहां कुचैली नही होते हैं। यस्य गृहे पिता माता भ्राता भगिनी सुखावहा। परस्परे नैव वैशम्यं तत् गेहे न कुचैलिनः।। अर्थात जिसके घर

में पिता माता भ्राता भगिनी सुखपूर्वक आनंदित रहते हैं और आपस में विषमता नहीं होती है उनके घर में कुचैली नही होते हैं।

हरिहर द्रोह रतो नित्यं माता पितरौ सुह्रत। न नारीणां सम्मानो कुचैली जातः धुवम्।। अर्थात माता पिता सुह्रत विष्णु शिव में निरंतर द्रोह रत और नारियों का सम्मान न करने वाले के घर निश्चित रूप से कुचैली ही जन्म लेते हैं। शौच स्नान संध्या जपं यस्य गेहे आतिथ्य सेवा यज्ञों देव पूजनम्। बलिवैश्य यज्ञों पोष्यवर्गाणि तृप्तिं तस्य गेहस्य जातो न भवेत् कुचैली।। अर्थात जिस घर में समयबद्धता से शौच, स्नान, संध्या, जप, आतिथ्य सत्कार, यज्ञ, देव पूजन, बलिवैश्व देव का पूजन यज्ञ और अपने आश्रित जनो की तृप्ति प्रत्येक दिन होता है उस परिवार का संस्कार, आचार–विचार व्यवहार बहुत ही महत्वपूर्ण होता है, उसके परिवार के लोग श्रेष्ठ पुरुष होते हैं।

प्रेरक प्रसंग

शिक्षा की महिमा

खुशीराम कुमवाल
तकनीशियन, जल यांत्रिकी इकाई, कोटेश्वर

एक फटी धोती और फटी कमीज पहने एक व्यक्ति अपने 15–16 वर्ष की बेटी के साथ एक बड़े होटल में पहुंचा। उन दोनों को कुर्सी पर बैठे देखकर एक वेटर ने उनके सामने दो ग्लास ठंडे पानी के रख दिए और पूछा, आपके लिए क्या लाना है? उस व्यक्ति ने कहा कि मैंने अपनी बेटी से वादा किया था कि यदि तुम कक्षा में जिले में प्रथम आओगी तो मैं तुम्हें शहर के सबसे बड़े होटल में एक डोसा खिलाऊंगा। इसने वादा पूरा कर दिया। कृपया इसके लिए एक डोसा ले आओ। वेटर ने पूछा, आपके लिए क्या लाना है? उसने कहा, मेरे पास एक ही डोसे के पैसे हैं। पूरी बात सुनकर वेटर मालिक के पास गया और पूरी कहानी बताकर कहा कि मैं इन दोनों को भर पेट नाश्ता कराना चाहता हूं। अभी मेरे पास पैसे नहीं है इसलिए इनके बिल की रकम आप मेरी सैलरी से काट लेना। मालिक ने कहा, आज हम होटल की तरफ से इस होनहार बेटी को सफलता की पार्टी देंगे।

होटल वालों ने टेबल को अच्छी तरह से सजाया और बहुत ही शानदार ढंग से सभी उपस्थित ग्राहकों के साथ उस गरीब बच्ची की सफलता का जश्न मनाया। मालिक ने उन्हें एक बड़े थैले में तीन डोसे और पूरे मोहल्ले में बांटने के लिए मिठाई उपहार स्वरूप पैक करके दी। इतना सम्मान पाकर आंखों में खुशी के आंसू लिए वे अपने घर चले गए। समय बीत गया और एक दिन वही लड़की आईएएस की परीक्षा पास कर उसी शहर में कलेक्टर बन कर आई और उसने सबसे पहले उसी होटल में एक सिपाही भेजकर कहलाया कि कलेक्टर साहिबा नाश्ता करने आएगी। होटल मालिक ने तुरंत टेबल को अच्छी तरह से सजा दिया। यह खबर सुनते ही पूरा होटल ग्राहकों से भर गया। कलेक्टर रूपी वही लड़की होटल में मुस्कुराती अपने माता–पिता के साथ पहुंची। सभी उसके सम्मान में खड़े हो गए। होटल के मालिक ने उन्हें गुलदस्ता भेंट किया और आर्डर के लिए निवेदन किया। उस लड़की ने खड़े होकर होटल मालिक और वेटर के आगे नतमस्तक होकर कहा, शायद आप दोनों ने मुझे पहचाना नहीं। में वही लड़की हूं जिसके पिता के पास दूसरा डोसा देने के लिए पैसे नहीं थे और आप दोनों ने मानवता की अच्छी मिसाल पेश करते हुए मेरे पास होने की खुशी में ही शानदार पार्टी दी थी और पूरे मोहल्ले के लिए मिठाई भी पैक करके दी थी। आज मैं आप दोनों की बदौलत कलेक्टर बनी हूं। आप दोनों का एहसान में सदैव याद रखूंगी। आज यह पार्टी मेरी तरफ से है और उपस्थित सभी ग्राहकों एवं पूरे स्टाफ का बिल मैं दूंगी। कल आप दोनों को श्रेष्ठ नागरिक सम्मान एक नागरिक मंच पर दिया जाएगा।

इस कहानी से यही शिक्षा मिलती है कि किसी गरीब की गरीबी का मजाक बनाने के बजाए उसकी प्रतिभा का उचित सम्मान करें।

दो की दोस्ती में एक का धैर्य जरुरी है – **अज्ञात**

स्वास्थ्य परिचर्चा

योगश्चः चित्त-वृत्ति निरोधः भाग : 2

दिलवर सिंह पंवार
उप अधिकारी, एनसीआर कार्यालय, कौशांबी

(पिछले लेख योगश्चः चित्त–वृत्ति निरोधः के अंतर्गत पंतजलि के अष्टांग–योग के पहले दो अंग यम और नियम के बारे में था।)

आसन

पंतजलि के अष्टांग–योग का तीसरा चरण 'आसन' है। आसन कैसे हों। इसके लिए कहा गया है – 'स्थिरम सुखम् आसनम'। शरीर की सुखपूर्वक स्थिर अवस्था आसन है।

प्रत्येक जीव को साधन के रूप में दो प्रकार के शरीर जीवन यापन के लिए मिले हैं:– (1) स्थूल शरीर (2) सूक्ष्म शरीर (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार)। यह साधन (शरीर) योग मार्ग (प्रभु–प्राप्ति) में बाधा न बने इसलिए स्थूल शरीर को स्वस्थ (व्यवस्थित व सहज) करने के लिए 'आसन' अति आवश्यक है। स्थूल शरीर के शोधन के साथ–साथ सूक्ष्म शरीर पर भी शुद्धता का प्रभाव अवश्य आता है। इसके लिए नियमित और सघन शारीरिक व मानसिक अभ्यास की आवश्यकता है। यह अभ्यास दक्ष आचार्यो (शिक्षक) के संरक्षण में किया जाए तो लाभ तीव्र व उपलब्धि शीघ्र होगी।

अभ्यास की दृष्टि से इन आसनों को विशेषतः छह समूहों में बांटा गया है–

(1) खड़े होकर किए जाने वाले आसन– ताड़ासन, तिर्यक ताड़ासन, त्रिकोणासन, कटिचक्रासन, वृक्षासन, अश्वत्थासन, वीरासन, सूर्य नमस्कार।

(2) बैठकर किए जाने वाले आसन–पद्मासन, सिद्धासन, सुखासन, जानुशिरासन, पश्चिमोत्तानासन, कमर चक्रासन, कोणासन, गौमुखासन, अर्द्धमत्यसेंद्रासन, आकर्णधनुरासन, नेत्र सुरक्षा, ग्रीवा चालन, योगमुद्रा, वक्रासन, सिंहासन, गर्भासन, अदराकर्षण।

(3) घुटनों के बल बैठकर किए जाने वाले आसन– वज्रासन, सुप्त वज्रासन, उष्ट्रासन, शशांकासन, मंडूकासन, मार्जारासन, वीरभद्रासन।

(4) पेट के सहारे किए जाने वाले आसन– भुजंगासन, तिर्यक भुजंगासन, शलभासन, धनुरासन, सर्पासन, नौकासन, मयूरासन, पेडू आकर्षणासन।

(5) पीठ के बल किए जाने वाले आसन–मकरासन, पादोत्तानासन, चक्रासन, पवन मुक्तासन, हलासन, सर्वांगासन, मत्यासन, बालक्रीडासन, हस्तापाद चालन, ताड़ासन, नावासन, मेरू आकर्षणासन, हस्तपादोत्तानासन, विपरीतकरणी, कर्णपीडासन, शवासन।

(6) सिर के बल किए जाने वाले आसन – शीर्षासन।

प्राणायामः– अष्टांग योग का चतुर्थ चरण 'प्राणायाम' है। भगवान ने सृष्टि के कण–कण को प्राणमय बनाया है, अर्थात शक्ति (कार्य करने की सामर्थ्य) हर सूक्ष्म कण (परमाणु) में भी है। विशेषता उसी से है कि प्रभु ने जिस व्यवस्था के लिए सृष्टि का निर्माण किया, उसकी दिशा और दशा उचित बनी रहे। जीवन का सीधा संबंध श्वांस से है। यद्यपि श्वांस स्थूल है परंतु श्वांस में निहित प्राण ऊर्जा चेतन शक्ति के संपर्क मात्र से शरीर को गतिमान बनाए रखती है।

जीव जगत में मानव योनि श्रेष्ठतम है अर्थात मनुष्य ने जीवात्मा, जीव, शरीर और जीवन की विभिन्न व्यवस्थाओं को सूक्ष्मतम स्तर से परखा। प्राणायाम का शोध भी मनुष्य ने किया है। शरीर का हर अंग प्राणमय (ऊर्जावान) रहकर अपना कार्य व्यवस्थित ढंग से निष्पादित करता रहे। इस हेतु श्वांस पर प्रयोग करके नाड़ियों में रक्त प्रवाह को प्रभावित कर प्राण ऊर्जा का प्रसार शरीर की हर कोशिका तक किया जाता है। इस प्रक्रिया में तीनों

बंधों (मूलबंध, उड्डयान बंध व जालंधर बंध) का प्रयोग कर शरीर में शक्ति के केंद्रों (सात चक्र–मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहद, विशुद्धि, आज्ञाचक्र एवं सहस्रार चक्र) को जागृत किया जाता है। इन चक्रों के साथ–साथ ग्रंथियों की स्राव शक्ति भी व्यवस्थित हो जाती है। इन सबका मस्तिष्क के विश्राममय होने में विशेष प्रभाव पड़ता है और मन शांत होने लगता है।

प्राणायाम व्यवस्था में श्वांस को चार चरणों में विभक्त किया है – पूरक (श्वांस भरना) आंतरिक कुंभक (श्वांस अंदर रोकना), रेचक (श्वांस बाहर निकालना) व वाह्य कुंभक (श्वांस बाहर रोकना)। नियमित व सघन अभ्यास में श्वांस गति धीमी और कुंभक अधिक हो जाता है। इससे फेफड़ों के तीनों भाग (ऊपरी, मध्य और निचला) प्राणिक ऊर्जा से भरपूर हो जाते हैं। वैसे श्वांस का मुख्य केंद्र नाभि क्षेत्र है अर्थात श्वांस का नियंत्रण नाभि से होता है। प्राणायाम अभ्यास के समय गर्दन व रीढ़ सीधी होनी चाहिए और आसन स्थिर होना चाहिए। वातावरण शांत व शुद्ध होना चाहिए। मुख्य प्राणायाम–गहरा लंबा श्वांस, अनुलोम–विलोम, प्लावनी, अग्निसार, कपालभाति, सूर्यभेदी, भस्त्रिका, उज्जायी, भ्रामरी, चंद्रभेदी, शीतली, शीतकारी, तालबद्ध, नाड़ीशोधन है। इनका चयन भी योग्य शिक्षक की देख–रेख में व्यक्तिगत विकास व ऋतु के अनुसार करना चाहिए।

प्रत्याहार:– अष्टांग योग का पांचवां अंग 'प्रत्याहार' है। प्रत्याहार–प्रतिआहार। यह वास्तव में इंद्रियों की वृत्ति या स्वभाव के लिए है कि ज्ञानेंद्रियों का जो स्वभाव है उसके विरूद्ध या प्रतिकूल।

संसार में मनुष्य फल की आकांक्षा रखकर ही कर्म करता है और वांछित फल न मिलने पर वह अशांत व तनाव में रहता है। इस तनाव के उपचार में योगमार्ग सही व्यवस्था प्रदान करता है। यदि हम गहन विचार करें तो पाएंगे कि संसार में सुख नहीं है। यहां एक कामना पूर्ण हो जाए तो दूसरी अधिक प्रबल कामना तुरंत उत्पन्न हो जाती है अर्थात पुनः अतृप्ति। यह संसार परिवर्तनशील है, नश्वर है। ऐसे जगत में शांति (स्थिरता) कहां। बिल्कुल ऐसा ही यह मन भी चंचल (परिवर्तनशील) है जो आंतरिक अनुभूति भी कराता है और वाह्य भी। सैद्धांतिक रूप में परिवर्तनशील जगत से जब यह चंचल मन संबंध स्थापित करता है तो और अधिक चंचल होकर अशांत बना रहता है। मन की इस अशांत (अतृप्ता) अवस्था का समाधान है 'प्रत्याहार'।

मनुष्य जीवन का सबसे मुख्य उद्देश्य है परमात्म–भाव में स्थित होना। यह परमात्म–भाव पूर्णतः भावनात्मक है। भावनात्मक अवस्था केवल मन के शांत होने पर ही संभव है। जगत के साथ मन का बहिर्मुखी संबंध है और परमात्मा के साथ आंतरिक। इस आंतरिक व्यवस्था को समझने और इसमें स्थित होने से पूर्व हमें साधना गहनता से समझकर करनी होती है। जरा विचार करें कि ज्ञानेंद्रियां पांच हैं: आंख, कान, नाक, त्वचा, जिह्वा। ये ज्ञानेंद्रियां ही हमारा संबंध जगत से जोड़ती है और जब इनका निग्रह (नियंत्रण) हो तो ये ज्ञानेंद्रियां ही आंतरिक अनुभव भी कराती हैं। जैसे शरीर विज्ञान के आधार पर आंख बाहरी जगत का प्रतिबिंब मानस पटल पर चित्रित करती है। अर्थात जब आंख खुली हो, तो बाहरी प्रकाश तरंगों की अनुभूति मन पर कराती है लेकिन जब आंख बंद हो तो मन पर काल्पनिक चित्र फिर भी बनते रहते हैं, ऐसा इसलिए होता है कि इंद्रियों में एक विशेष गुण है कि यह बाहर की संवेदनाओं को तो ग्रहण करती ही है, साथ–साथ आंतरिक अनुभूतियां भी कराती हैं। इंद्रियों की इस आंतरिक सामर्थ्य के साथ अनुसंधान करना ही 'प्रत्याहार' है। हमारी ज्ञानेंद्रियां बाहरी संवेदनाएं मन को भेजती है जिससे मन और अधिक चंचल होता है और अहंकार में वृद्धि हो जाती है। मन को शांत रखने के लिए इन बाहरी संवेदनाओं को रोकना आवश्यक है। यही प्रयास है 'प्रत्याहार'।

इस प्रकार, अष्टांग योग के प्रत्येक चरण के आचरण में आने पर अगले चरण की शुरूआत स्वतः ही हो जाती है। अतः प्रत्येक मनुष्य को नित्य, निष्ठापूर्वक योग–यज्ञ में अपनी आहुतियां डालनी चाहिए; ताकि जीवन विवेकपूर्ण, ओजपूर्ण, पुरूषार्थी, समर्पित, सेवायुक्त, संपन्न, सफल एवं प्रेममय हो और वह मानव से महामानव के अधिकारी हो जाएं।

हिंदी अनुभाग की ओर से......

हिंदी टाइपिंग के लिए यूनिकोड एकमात्र विकल्प भाग-3

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि कम्प्यूटरों पर यूनिकोड प्रणाली के माध्यम से हिंदी में टाइप करना कैसे आसान हो गया है। यूनिकोड प्रणाली के अंतर्गत हिंदी में कार्य करना हो तो HI को एवं अंग्रेजी में कार्य करना हो तो ENG को कैसे स्विच किया जा सकता है। गूगल इनपुट टूल एवं फोनेटिक की बोर्ड के माध्यम से टाइप करने के बारे में भी जानकारी दी गई।

इस अंक में बता रहे हैं कि ऐसे व्यक्ति जो पहले कृतीदेव एवं अन्य गैर यूनिकोड फोंट में कार्य कर रहे थे वे कैसे उसी प्रकार यूनिकोड प्रणाली में टाइप कर सकते हैं–

माइक्रोसॉफ्ट इंडिक इनपुट टूल

ऐसे व्यक्ति जिन्हें कृतीदेव या अन्य गैर यूनिकोड फोंट में कार्य करने की आदत पड़ गई है और अब वे किसी अन्य की–बोर्ड में कार्य नहीं करना चाहते उनके लिए माइक्रोसॉफ्ट इंडिक इनपुट टूल विकसित किए गए हैं। ये टूल हिंदी टाइपिंग जानने वाले प्रत्येक व्यक्ति को यूनिकोड प्रणाली में कार्य करने में सक्षम बनाते है। इसके लिए उन्हें https://bhashaindia.com या

https://www-microsoft-com/en&in/bhashaindia/ वेबसाइट पर जाना होगा।

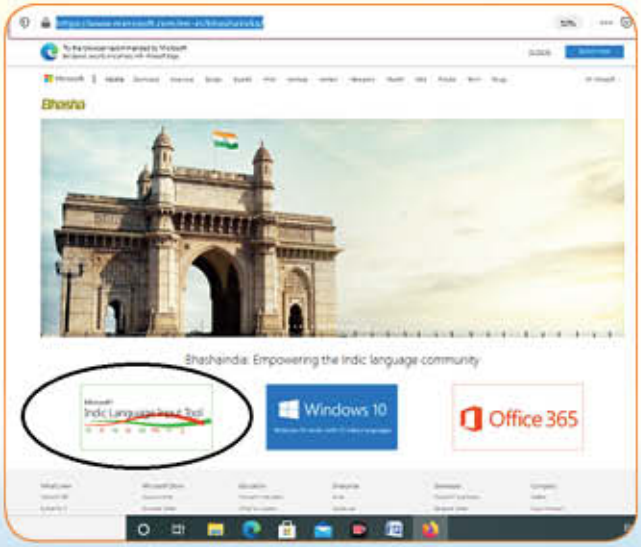

उपर्युक्त वेबसाइट पर जाकर नीचे दिए गए तीन ऑप्शन में से चित्र के अनुसार गोलाकार किया गया ऑप्शन क्लिक करें। इसके बाद एक पेज खुलेगा जिसमें indic Input 3, indic input 2 एव indic input 1 के अंतर्गत विभिन्न विडोंज के वर्जन एवं बिट के अनुसार टूल दिए गए हैं । इस पेज में 12 भारतीय भाषाओं जैसे असमिया, बंगाली, गुजराती, हिंदी, कन्नड, मलयालम, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, तमिल एवं तेलगु भाषाओं में टाइप करना सुगम बनाने के लिए टूल दिए गए हैं।

इस पेज से अपनी विंडो की बिट एवं इसके मेक की प्रापर्टी के अनुसार हिंदी टूल डाउनलोड कर सकते हैं। एक जिप फाइल डाउनलोड होगी जिसे अनजिप कर exe फाइल को रन कराना होगा। यह अवश्य ही ध्यान रखें कि आपकी विंडो 7 है या 10 है और यह कितने बिट की है उसी के अनुसार टूल डाउनलोड कर रन कराएं। उचित टूल डाउनलोड करने के लिए कृपया इस पेज में दिए गए टूल्स का विवरण चित्रात्मक रूप में नीचे प्रदर्शित किया जा रहा है –

विंडो 8 या उससे उपर के विंडोज के 32 बिट एवं 64 बिट संस्करण के लिए नीचे गोलाकार किए गए टूल को डाउनलोड करें ।

विंडो 7 के 32 बिट एवं 64 बिट संस्करण के लिए नीचे गोलाकार किए गए टूल को डाउनलोड करें।

विंडो XP के लिए नीचे गोलाकार किए गए टूल को डाउनलोड करें।

यदि विंडो की प्रापर्टी के अनुरूप टूल डाउनलोड कर रन कराया गया है तो यह स्वतः ही टास्कबार में HI आप्शन में आ जाता है। यदि कोई व्यक्ति पहले से कृतीदेव में टाइप कर रहा है तो HI को क्लिक करें। इसके बाद इसमें नीचे दिए गए show the language bar को क्लिक करें। यह language bar आपको डेस्कटॉप के ऊपर राइट साइड में दिखाई देगी। language bar में दिए गए सेटिंग ऑप्शन को क्लिक करें एवं keyboard क्लिक कर Hindi Remington (Gail) का चयन करें। यह प्रक्रिया मात्र एक बार करनी होगी।

वाइस टाइपिंग

सबसे पहले वाइस टाइपिंग के लिए सी डेक पूणे के द्वारा हिंदी में बोलकर टाइप करने के लिए एक साफ्टवेयर तैयार किया गया था जिसकी कीमत लगभग 6000 रुपए है। उत्तरोत्तर विकास के क्रम में गूगल ने बोलकर टाइप करने के लिए क्रम में बहुत अच्छी व्यवस्था की है जो कि निशुल्क उपलब्ध है एवं इसमें वाइस रिकोगोनाइजेशन करने की आवश्यकता नहीं है। कोई भी व्यक्ति अपने डेस्कटॉप या लेपटॉप पर आसानी से टाइप कर सकता है। इसके लिए क्या करना होगा आइए जानते हैं–

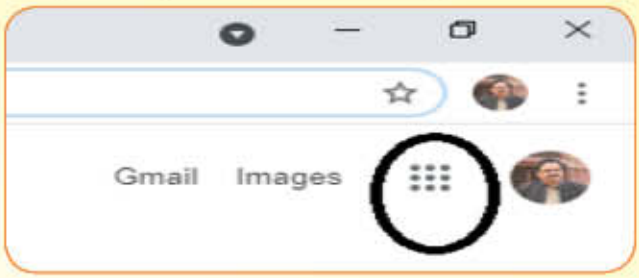

सबसे पहले Google Chrome Browser खोलें। अपने जी मेल अकाउंट में लॉग–इन करें। नीचे दिए गए चित्र में गोलाकार किए गए गूगल एप्स को खोलें। इसमें Docs को क्लिक करें। Blank document खोलें। टूल्स में जाएं। Voice Typing क्लिक करें। बांयी ओर एक माइक बना हुआ आएगा जिसके नीचे Click to speak लिखा होगा। इसके क्लिक करने से पूर्व इसमें भाषा का चयन करें। फिर क्लिक करें एवं बोलना शुरू करें। यह उच्चारण की स्पष्टता के अनुसार बहुत तेजी से टाइप करता है।

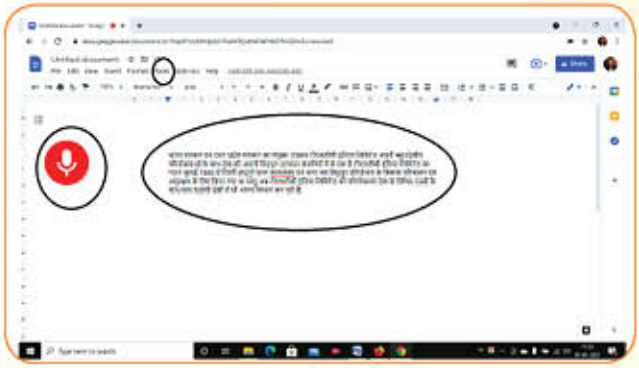

पिछले 02 अंकों एवं इस तीसरे अंक में हिंदी में टाइप करने की विभिन्न विधियों के बारे में अवगत कराया गया। जिसका अध्ययन करके कोई भी व्यक्ति आसानी से यूनिकोड प्रणाली में काम करने में सक्षम हो सकता है जो कि इस समय की बहुत आवश्यक मांग है। माननीय संसदीय राजभाषा समिति की प्रमुख अपेक्षाओं में से यह भी एक बड़ी अपेक्षा है कि कार्यालय के सभी कम्प्यूटरों में यूनिकोड प्रणाली में कार्य करने की सुविधा मौजूद हो। बस थोड़ी सी इच्छा शक्ति दिखाने की आवश्यकता है शेष कार्य स्वतः हो जाता है।

कविता

मेरी बेटियां

हर बार ये घर किलकारियों से गूंज उठता है,
लोगों को तो छोड़ो, घर खुद में ही खूबसजता संवरता है,
हो जाता है खुशियों से भरा ये घर हरदम,
जब–जब घर में रक्षाबंधन भाईदूज का त्यौहार होता है,
मेहंदी के रंग में निखार, खुशियों भरा आंगन हर बार,
हर एक त्योहार में उन्हीं से श्रृंगार होता है,
हंसता और खेलता खुशनसीब होता है वो आंगन,
जिस घर में बेटियों का अवतार होता है।
चिड़ियों की चहचहाट में आने वाला वो संगीत होती है,
हर एक आंगन की खुशियों वाली वो गीत होती है,
सबको पसंद आने वाली खुबसूरत और प्यारी,
बसंत की ऋतु होती है,
वो घर हैं भाग्यशाली जिसमें बेटा है होता,
पर सौभाग्यशाली है वो घर जिसमें बेटी होती है,
ठंड में है वो सुबह की पहली किरण,
जिंदगी को सही ढंग से जीने का आचरण,
मां–बाप के घर आने की हमेशा वो रखती है आस,
बेटियां तो बेटी नहीं, होती है एक अटूट विश्वास,
मां की सहेली, पापा की परी, कहलाती हैं बेटियां,
उनका मान और उनका सम्मान बढ़ाती हैं बेटियां,
पराया धन नहीं दो घरों को रोशन कर जाती हैं बेटियां,
मां –बाप के लिये प्यार से "बेटा" कहलाती हैं बेटियां,
हम भी बेटों से कम नहीं, ये अहसास दिलाती हैं बेटियां,
मां की प्यारी और पापा की दुलारी बन जाती हैं बेटियां,
है नन्ही सी उम्र में पर बड़ी हो जाती हैं,
सारी परेशानियों को मुस्करा के झेल जाती है,
दिन भर की थकान को एक मुस्कराहट से दूर भगाती हैं,
हैं तो वो छोटी सी पर बड़ी होने का हौंसला दिलाती हैं,
मुझसे हो जाएगा पापा आप परेशान न हों, हर बार मुझसे
ये ही कह जाती हैं,
चेहरे पर रख के मुस्कान,
अपने आंसुओं को हरदम छुपाती हैं,
बस एक बार प्यार से देख लो,
चाहे कितना भी वो गुस्से में हो,
यूं ही पिघल जाती हैं, घर की जरूरतों के अनुसार
वो समझदार बन जाती हैं,
पर हैं तो वो नन्हीं सी, हम ही नादान हैं जो सोचते हैं कि
बेटियां सब समझ जाती हैं,
भाई–बहन का प्यार न होता, राखी का त्यौहार न होता,
खुशियों में वो बात न होती, ममता का सम्मान न होता,
संस्कारों का मान न होता, त्योहारों में जान न होती,
घर में संगीत न होता, बात–बात पे गीत न होता,
दिवाली की रंगोली न होती,
पकवानों वाली होली न होती
पापा की दुलारी परी न होती,
मां की प्यारी सहेली न होती,
वैसे घर का कोई दुर्भाग्य न होता,
पर कन्यादान का सौभाग्य न होता,
होता सब कुछ खुशियों वाला,
पर त्योहारों का श्रृंगार न होता,
घर में अगर बेटियों का अवतार न होता....

– पंकज विश्वकर्मा
उप प्रबंधक (भू–विज्ञान), ऋषिकेश

कविता

आज मैंने देखा है

आज मैंने प्रकृति को मुस्कराते हुए देखा है।
पेड़ों को लहराते और पक्षियों को चहचहाते हुए देखा है।
आज मैंने प्रकृति को मुस्कराते हुए देखा है।
आज मैंने शहरों को ठहरे हुए देखा है।
सड़कों पर सन्नाटा और घरों में शोर होते देखा है।
आज मैंने शहरों को ठहरे हुए देखा है।
आज मैंने इंसान को फुर्सत में देखा है।
दौड़ भाग से दूर परिवार के साथ समय बिताते देखा है।
आज मैंने इंसान को फुर्सत में देखा है।
आज मैंने विज्ञान को बहुत छोटा देखा है।
इतनी तरक्की के बावजूद एक सूक्ष्म जीव से डरते देखा है।
आज मैंने विज्ञान को बहुत छोटा देखा है ।
आज मैंने इंसानियत को फिर से देखा है।
विषम परिस्थितियों में भी एक दूसरे का हाथ थामते देखा है।
आज मैंने इंसानियत को फिर से देखा है।
आज मैंने इंसान में साहस को फिर देखा है।
बिना हार माने इस महामारी से संघर्ष करते देखा है।
आज मैंने इंसान में साहस को फिर देखा है।

– अश्वनी आनंद
वरि.अभियंता (एमपीएस), ऋषिकेश

क्रोध में मनुष्य अपने मन की बात कहने के बजाए दूसरों के हृदय को ज्यादा दुखाता है – **मुंशी प्रेमचंद**

कविता

मरुस्थलों के बीचों बीच

फिर हुई आहट, फिर दरवाजा खटखटाया,
छत हो गई उदास ! कौन आया ?

गुल हो गई बत्ती, सन रह गई दीवारें,
पसर गया अंधेरा, दुबक गया कोने में,
दूधिया प्रकाश ! कौन आया ?

मुंडेरे झांकती, चीख उठी चांदनी
ढांप लिया चेहरा, लौट चला खिड़कियों से
झांकता आकाश ! कौन आया ?

निकल पड़ा सूरज, कांधे पर लाद
उजाले की गठरी, हाथ की लाठी का
खो गया विश्वास ! कौन आया ?

पाँव..ढूंढते रहे छांव, झुलस गया रोम–रोम
आम के बौर का, तिलमिला उठी
हरी–हरी घास ! कौन आया?

चौराहा बोलता है, खौफ की भाषा लिखने लगा है
कोलाहल की छाती पर
खामोशी का इतिहास ! कौन आया ?

– महेन्द्र शर्मा
आ.सं. 3073, ज्वाय अपार्टमेंट्स, प्लाट नं. 2,
सेक्टर–2, द्वारका, नई दिल्ली

कविता

सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ रचना

दया, धैर्य, स्नेह से पूरित, तू सुंदर सी इक रचना है।
नव जीवन उत्पत्ति की शक्ति लिए, तू सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ रचना है।

स्वामित्व बनाने की जंग में सदियों से, तेरे स्त्रीत्व का अपमान हुआ,
कभी प्रियंका, कभी निर्भया बना, तुझको सरेआम शर्मसार किया,
आयशा बना तेरे प्यार को, फिर दहेज की भेंट चढ़ा दिया,
सम्मान तेरा अधिकार तेरा कई बार तुझसे छीना गया।

उठ खड़ी हुई फिर तू गौरव संग, अपनी सब शक्ति लिए,
कल्पना बंद पूर्ण किए अपने, हर स्वप्न फिर अंतरिक्ष तले,
जोया बंद कर तूने अपने, सपनों की लंबी उड़ान भरी,
मंगल मिशन को पूर्ण किया, और फिर राकेट वूमन बनी।
इसलिए सृष्टि की तू सर्वश्रेष्ठ इक रचना बनी।

स्वच्छंद विचारों भाई मन पतंग को, संस्कार की डोर से पकड़ा है,
उड़ान भरी है आसमान की, पर जमीन पर ही तेरा घरोंदा है,
निरंतर बढ़ते पथ पर तूने, हर कंटक से सबक लिया,
कठिन राह की हर बाधा को, तूने हंस–हंस कर पार किया।

युग–युग से अपनी संस्कृति की, तू ही तो संदेशवाहक बनी,
न मिटने देगी अपनी संस्कृति, और न अपनी पहचान कभी,
नहीं बनना पुरुष समान तुझे, तेरी मंजिल उससे आगे है,
गर्व रहा है गर्व रहेगा, तू जो स्त्री धन है।
इसलिए सदियों से ही तू, सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ रचना है।

– अमित पंवार
उप अधिकारी (फार्मेसी) चिकित्सालय, भागीरथीपुरम

कविता

कोरोना से जंग

यह वक्त नही है आपस में गिले–शिकवे करने का।
वक्त है, दुआएं मांगने का।
एक दूसरे का ढांढस और होंसला बढ़ाने का।
लड़ेंगे और जीतेंगे भी।
अभी वक्त नही कमियाँ गिनवाने का।
सुबह क्या लेकर आएगी और क्या देगी,
अभी वक्त नही रुक कर इंतजार करने का।
अब वक्त है आगे बढ़कर मौत के दामन से
जिंदगी को खींचकर लाने का।

– दीपक राज मेहता
वरि. कार्मिक अधिकारी, मुख्य अभिलेख कार्यालय, ऋषिकेश

कविता

अच्छा करने की चाह

अच्छा करने की चाह है,
कर जाया भी करो,
ठोकर लगी जो,
तो पछताया ना करो,
अपने को कभी गिराया ना करो,
अन्याय हुआ जो,
तो घबराया ना करो,
सत्य को अपने झुकाया ना करो।
कर्म क्या है अच्छे,
ये बताया ना करो,
उसे जताया ना करो,
स्वयं के हंस लेने पर,
दुसरो को रुलाया ना करो,
अच्छा करने की चाह है तो
कर जाया भी करो,
फिर घबराया ना करो।
अनुभवों से समझने पर,
समझाया भी करो,
आराम की नीद सोने पर,
दूसरो को, जगाया ना करो,
अपनी खुशी के लिए,
औरो को रुलाया ना करो,
कठिन रास्तों पर चल,
उसे सबके लिए सरल बनाया भी करो।
जीत का अगर हुनर है तो,
फिर हराया ना करो,
पेट भरा है अपना तो,
दूसरों को खिलाया भी करो,
अनुभवों से पाया है,
तो उसे बताया भी करो,
सर्व सम्पन्न होने पर,
किसी को मजबूर बनाया ना करो ।
खुद की दौड़ में किसी के लिए,
रोक बन जाया ना करो,
समझने पर, बताया भी करो,
खाली समय को गवाया ना करो,
अंधेरे मे बत्ती जलाया करो,
अच्छा करने की चाह है,
कर जाया भी करो
फिर घबराया ना करो।
योग्य होने पर,
योग्यता को दिखलाया भी करो,
सबक बनना है सबके लिए,
ऐसा कुछ कर जाया करो,
पूरी जिन्दगी बिताने पर निस्वार्थ,
किसी के लिए कुछ कर जाया भी करो,
अंतत: फिर पछताया ना करो,
फिर घबराया ना करो।

– सिद्धिमा डोभाल
प्रबंधक (विधि एवं माध्य.), ऋषिकेश

एक अच्छे अखबार के शब्द अपने आप बोल देते हैं – **बाल गंगाधर तिलक**

कविता

मार दो व्याकुल मन की चाहत

मार दो व्याकुल मन की चाहत,
त्याग दो मन से लोभ लालच,
अब बदल दो अपनी गलत आदत,
तभी बनेगा सतर्क समृद्ध भारत।
ईमानदारी नेकी से करो सबके काम,
समाज में होगा आपकी अच्छाई का नाम,
मन को मिलेगा अद्भुत संतोष, राहत,
अब बदल दो अपनी गलत आदत,
तभी बनेगा सतर्क समृद्ध भारत।
हरेक काम पर नजर रहेगी,
हर हाल में सतर्क रहेंगे,
गलत बात अब नहीं सहेंगे,
समाज को भी जागरूक करेंगें,
देश के लिए सोचेंगे त्याग के स्वार्थ।
अब बदल दो अपनी गलत आदत,
तभी बनेगा सतर्क समृद्ध भारत।
दलाल बिचौलिए, ठग, भ्रष्टाचारी,
यह सब समाज की बुरी बीमारी,
घूसखोरी मिटाने की सब करो तैयारी,
समाज में बढ़ाएंगे अधिकारों की जानकारी,
भ्रष्टाचार के पैसों से नहीं होगी दावत।
अब बदल दो अपनी गलत आदत,
तभी बनेगा सतर्क समृद्ध भारत।
पंच प्रधान, नेता, बाबू अधिकारी
विधायक सांसद, प्रशासन सरकारी,
सबकी निश्चित पूर्ण जिम्मेदारी,
सूचना का कानून में भागीदारी,
अब बदल दो अपनी गलत आदत,
सब सतर्क रहें जनता के बावत,
तभी बनेगा सतर्क समृद्ध भारत।

– पुरुषोत्तम सिंह रावत
वरिष्ठ सुरक्षा अधिकारी, कोटेश्वर

कविता

राष्ट्रभाषा

राष्ट्रभाषा के बिना देश है गूंगा,
पूरे विश्व में यह नारा है गूंजा।
राष्ट्रभाषा से ही हमारी पहचान है,
वरना हम सब देशवासी अनजान हैं।
राष्ट्रभाषा से ही अभिव्यक्ति की शान है,
तभी तो यह अभिमान व देश की पहचान है।
राष्ट्रभाषा का करो सम्मान,
वरना करोगे खुद का ही अपमान।
राष्ट्रभाषा का जिसको नहीं ज्ञान,
वह पढ़ा–लिखा होकर भी है अज्ञान ।
पूरे देश को अब यह बताना है,
राष्ट्रभाषा को पूरे विश्व में फैलाना है।
राष्ट्रभाषा हिंदी को बिंदी नहीं बनाना है,
माथे का तिलक बनाकर हर माथे पर सजाना है।
वतन है हमारी हिंदी,
हिंदी से है हिंदुस्तान।
सभी भाव में यह है रहती,
सहज स्वभाव में बोली जाती।
सूरज की किरण है,
हिंदी भारत के कण–कण में है ।
हिंदी भाषा है हमारी पहचान,
जो करवाती है हमारा पूरे विश्व में सम्मान।

– दिलीप कुमार द्विवेदी
वरि. प्रबंधक (मा.सं.), ऋषिकेश

कविता

अपनों की याद, पेन्दार्स गांव

शीतल वन में खुदेड़ मन से सुन बंद गढ़वाली गीत,
अपनों की खुद मैत की सुद घसेरियो के कंठ से प्रीत के गीत,
बगदी गदनयो मां जल की कल–कल पोथलो की
चुचयाट मधुर संगीत,
सेरा का चावल कोदा की रोटी कंडाली के साग नहीं
भरी अपनी धीत,
बकासुर की जोरदार का अमृत पानी भर–भर बंटा लाता था,
गवैर बाखरों संग घासपात पल्याण कैलपीर वन जाता था,
घर की लिपाई सैन सपाई घसने को मटखाणी से
मिट्टी लाता था,
बिजलवाण जी के घट में बिन भगवाडी घटवाडी
पिसवाने जाता था,
ओ मेहनतकश सीधा सरल पहाड़ी इस शहर में आकर लूट गया,
ओ घंडियाल धार नागराज धार की खड़ी उकाल देवथान
सब डूब गया,
विकास का उजियारा देश में फैला पीछे घुप अंधियारा छूट गया,
समाज संस्कृति रिश्ते नाते अपनी धरती सब साथ
हमारा छूट गया,
सब टूट गया सब डूब गया ठोर ठिकाना मिला नया प्रेम,
पेन्दार्स का भी पुनर्वास हुआ अनजान जगह पर बसा दिया,
कोई इधर बसा कोई उधर बसा अपना पेनदार्स गांव
सब बिखर गया,
ओ भाईचारा प्यार मोहब्बत अपनापन सब किधर गया,
पुनर्वास हुआ कलदार मिला मुरझाए चेहरे सब खूब खिले,
पेन्दार्स को अकेला छोड़ सभी खुशहाल भविष्य के साथ चलें,
मुड़के भी न देखा तुमने कभी पेन्दार्स रोया तुम पर हंसा,
शहरी हवा चकाचौंध फैशन में दयनीय हुई सबकी दशा,
गहरी झील में मैं रोया नामो निशान सब मिटा दिया,
पेन्दार्स गांव की याद में एक पत्थर तक लगवाना भुला दिया,
धन्य आशीष तुझको राजपाल कविता में जो मुझको याद किया।

– राजपाल आर्य
सहायक, सुरक्षा विभाग कोटेश्वर

कविता

घायल मन का अनायास पलायन

गांव से तुम धीरे–धीरे यूं फरार हो गए,
गांव में मकान मालिक थे शहर में किराएदार हो गए।

शहर से ना–उम्मीद लोग गांव आएंगें बोलते देखा है,
मैंने कुछ लोगों को शहरों में गजभर जमीन खोजते देखा है।

डाकिया पता अब बंद किवाड़ के ताले से पूछता है,
टूटती आस, ताला भी तो अब जंग से जूझता है।

चिट्ठी आई थी प्रदेश में रहने वाले की,
और डाकिया उसे वीरान घर गांव में ढूंढता है।

आंगन तन्हाईयों में घास सजाए लेटा था,
नल पानी देने के लिए इंतजार में बैठा था।

निहारता डगर तेरी, आओ मुझे अब तो खोल दो,
नल में पानी आ गया है, अब तो कोई बोल दो।

अब तो गांव की खेती भी परीक्षा लेने लगी है,
हमसे पहले जंगली जानवरों को भोजन देने लगी है।

गांव में बैठा उदास अकेले–अकेले अब सोचने लगा हूं ,
वीरानगी एकाकी में अब नाखून नोचने लगा हूं ।

शहर में चकाचौंध सुविधा है गांव में परेशानी बहुत है,
मातृभूमि पुरखों की मिट्टी से लगाव का रिश्ता बहुत है।

देवभूमि से पलायन क्षणिक आकर्षण आवेश है,
कितना मनमोहक सुंदर अपने गांव का परिवेश है।

क्या करें यहां अब परेशानी बहुत हैं,
पर ये दूर भी नहीं होने देता यहां निशानी बहुत हैं।

पलायन एक बीमारी है इसकी दवा भी मिल जाएगी,
कुछ बरसों की बात है फिर यहां खेती लहराएगी ।

– राजपाल आर्य
सहायक, सुरक्षा विभाग कोटेश्वर

राजभाषा गतिविधियां एवं आयोजित कार्यक्रम

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की अध्यक्षता करते श्री विजय गोयल, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (अ.प्र.) एवं उपस्थित सदस्यगण

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 22 जून, 2021 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (अ.प्र.), श्री विजय गोयल की अध्यक्षता में वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से किया गया। बैठक में कारपोरेट कार्यालय के विभागों/अनुभागों के प्रमुख एवं प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

बैठक में समिति के सदस्य सचिव, श्री पंकज कुमार शर्मा ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा वर्ष 2021–22 के लिए जारी वार्षिक कार्यक्रम पर विस्तृत चर्चा करते हुए इसमें विभिन्न मदों पर निर्धारित किए गए लक्ष्यों के बारे में जानकारी दी। बैठक में विभागों/अनुभागों से प्राप्त हुई हिंदी की तिमाही प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा करते हुए तिमाही के दौरान कारपोरेट कार्यालय के विभागों/अनुभागों एवं यूनिट/कार्यालयों में हिंदी में किए गए मूल पत्राचार एवं टिप्पणी लेखन के प्रतिशत की स्थिति के संबंध में अवगत कराया। इसके साथ ही उन्होंने पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर हिंदी अनुभाग द्वारा की गई अनुपालन कार्रवाई एवं भावी लक्ष्यों के बारे में भी जानकारी दी।

इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी पत्राचार में थोड़ा सा ओर प्रयास करने से हम राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि निगम में हिंदी कार्यशालाओं, प्रतियोगिताओं एवं अन्य राजभाषा संबंधी गतिविधियों को नियमित रूप से संचालित किया जाए जिससे निगम में राजभाषा कार्यान्वयन और बेहतर हो सके।

असफलता वह मसाला है जो सफलता का स्वाद देता है – **ट्रूमैन कैपोट**

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते श्री वीर सिंह, महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) एवं प्रतिभागी

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 18 जून, 2021 को उप प्रबंधक स्तर के कार्यपालकों एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति हरिद्वार के सदस्य संस्थानों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह आयोजन वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता टीएचडीसी इंडिया लि. के महाप्रबंधक (मा. सं. एवं प्रशासन), श्री वीर सिंह ने की। कार्यशाला में व्याख्यान देने के लिए मुख्य संकाय सदस्य उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय में आधुनिक ज्ञान विज्ञान संकाय के डीन, प्रो. (डॉ.) दिनेश चमोला, डी.लिट को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर टीएचडीसी इंडिया लि. के उप महाप्रबंधक (मा.सं.–स्था./हिंदी) सहित अनेक वरि. अधिकारी ऑनलाइन जुड़े हुए थे।

सर्वप्रथम टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के वरि. हिंदी अधिकारी एवं नराकास हरिद्वार के सचिव, श्री पंकज कुमार शर्मा ने कार्यक्रम के अध्यक्ष, संकाय सदस्य एवं कार्यशाला में प्रतिभागिता कर रहे कारपोरेट कार्यालय एवं नराकास हरिद्वार के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत करते हुए कहा कि कोविड–19 के प्रचंड प्रकोप से स्थितियां तेजी से बदली और हम इस कठिन समय में प्रौद्योगिकी का सफलतापूर्वक प्रयोग करते हुए वर्चुअल दुनिया में प्रवेश कर गए हैं। फिजीकल गैदरिंग न कर पाने के बावजूद प्रौद्योगिकी के विकास का लाभ उठाते हुए हम इन कठिन परिस्थितियों में भी अपने सांविधिक दायित्वों को पूरा कर पाने में सफल हो पा रहे हैं। श्री ईश्वर दत्त तिग्गा, उप महाप्रबंधक (मा. सं.– स्थापना/हिंदी) ने अपने संबोधन में कार्यशाला के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कर्मचारियों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उनके लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं और हिंदी कार्यशाला भी उन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में से एक है। इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष महोदय ने सभी प्रतिभागियों से आह्वान किया कि सभी प्रतिभागी इस कार्यशाला में डॉ. चमोला जैसे विद्वान से जो कुछ भी सीखकर जाएं उसका प्रयोग अपने कार्यक्षेत्र में करते हुए अपने–अपने विभागों/संस्थानों में राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ाने का प्रयास करें।

कार्यशाला में व्याख्यान देते प्रो. (डॉ.) दिनेश चमोला

कार्यशाला के मुख्य वक्ता डॉ चमोला ने अपने व्याख्यान में अनुवाद एवं प्रशासनिक हिंदी विषय पर प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया। उन्होंने विभिन्न शब्दावलियों की उपलब्धता के बारे में भी जानकारी दी और कहा कि प्रशासनिक सामग्री का अनुवाद करते समय प्रशासनिक शब्दावली का अपने पास होना आवश्यक है। उन्होंने

अनेक रोचक उदाहरण देते हुए एक ही शब्द के अनेक अर्थ होने एवं उचित स्थान पर उचित शब्द का प्रयोग करने के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी। श्री चमोला ने अनुवाद की प्रविधियों, सिद्धांतों एवं प्रयोग के बारे में भी बताया। साथ ही यह भी अनुरोध किया कि कार्यालय के कार्य में शब्दावलियों का अवलोकन करना आवश्यक है, अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि अनुवाद करना सभी को आना चाहिए तथा यह केवल किसी एक विभाग या अनुभाग तक सीमित नहीं रहना चाहिए, तभी हम राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी किए जाने वाले 14 प्रकार के दस्तावेजों को सही रूप में द्विभाषी जारी करने में सक्षम हो सकते हैं।

कार्यशाला में कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश के साथ–साथ नराकास हरिद्वार के कुल मिलाकर 106 कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की। चर्चा सत्र में अनेक कर्मचारियों ने अपने फीडबेक में कहा कि यह कार्यशाला

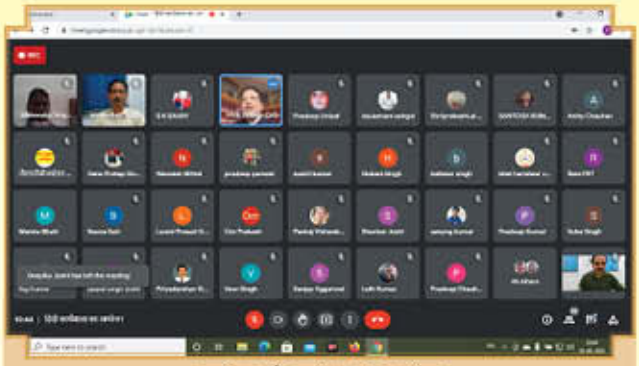

कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागीगण

कार्यालय के रोजमर्रा के कामकाज में काफी उपयोगी साबित होगी। अंत में वरि.हिंदी अधिकारी, श्री पंकज कुमार शर्मा ने कार्यक्रम के अध्यक्ष, महाप्रबंधक (एचआर एवं प्रशा.) एवं उप महाप्रबंधक (एचआर–स्था./हिंदी) तथा मुख्य संकाय सदस्य का कार्यशाला में समय देने के लिए आभार व्यक्त किया एवं समस्त प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया।

टिहरी यूनिट

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी में दिनांक 30.06.2021 को अधिकारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का ऑनलाइन आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ अपर महाप्रबंधक (मा.सं.), श्री बी.के. सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर अपर महाप्रबंधक (एच.आर.) ने राजभाषा के स्वरूप एवं महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हम सभी 'क' क्षेत्र में आते हैं इसलिए हम सुनिश्चित करें कि हम अपने समस्त कार्य हिंदी में ही करें। हमें अपने सभी कार्यालयीन कार्यों को शत–प्रतिशत हिंदी में संपन्न कर हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए।

कार्यशाला मे आंतरिक संकाय सदस्य, प्रबंधक (हिंदी), श्री इन्द्रराम नेगी ने उपस्थित प्रतिभागियों को देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता, हिंदी पत्राचार के विविध रूप, राजभाषा अधिनियम एवं नियम एवं कार्यालय में मानक शब्दावली के प्रयोग पर सारगर्भित एवं प्रभावशाली व्याख्यान दिया एवं अपने अनुभवों से प्रतिभागियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। इस कार्यशाला में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी के 21 अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की समाप्ति पर प्रबंधक (हिंदी), श्री नेगी ने सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया।

कोटेश्वर यूनिट

दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यशाला का शुभारंभ करते वरि. अधिकारीगण

कोटेश्वर यूनिट में विभागाध्यक्षों/अनुभागाध्यक्षों के लिए दिनांक 25.06.2021 को कोविड–19 के एसओपी को ध्यान में रखते हुए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। हिंदी कार्यशाला का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्री ए.के. घिल्डियाल, महाप्रबंधक (परियोजना) ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस कार्यशाला में यूनिट के सभी विभागों के उच्च अधिकारियों के साथ–साथ महाप्रबंधक (परियोजना) ने भी प्रतिभागिता की। कार्यशाला में राजभाषा से संबंधित नीति, कार्यान्वयन एवं इसके सांविधिक महत्व के बारे में जानकारी प्रदान करने के अलावा संसदीय समिति की विधिक प्रक्रिया तथा उनके द्वारा किए जाने वाले निरीक्षण संबंधी प्रक्रिया और प्रश्नावली पर प्रकाश डालते हुए संबंधित मंत्रालय एवं राजभाषा विभाग की अपेक्षाओं पर भी जानकारी दी। इस अवसर पर महाप्रबंधक (परियोजना) ने स्वयं कार्यशाला में प्रतिभागिता करते हुए सभी प्रतिभागियों से अनुरोध किया कि सभी विभागों/अनुभागों के प्रमुख राजभाषा संबंधी नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करें तथा अपना सरकारी कामकाज शत–प्रतिशत हिंदी में करने के लिए कर्मचारियों को प्रेरित करें। इसके साथ ही सब अपने–अपने स्तर पर राजभाषा कार्यान्वयन के लिए पूर्ण प्रयास करें। कार्यशाला में आंतरिक संकाय सदस्य, श्री डी.एस.रावत, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी ने व्याख्यान दिया तथा प्रस्तुतीकरण के माध्यम से सभी विभागाध्यक्षों/अनुभागाध्यक्षों को राजभाषा नीति, अधिनियम और नियमों की जानकारी देते हुए कहा कि समय–समय पर इनके अनुपालन की मॉनीटरिंग की आवश्यकता होती है। उन्होंने वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्य पूरा करने हेतु सबकी प्रतिबद्धता की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

एनसीआर कार्यालय, कौशांबी

हिंदी कार्यशाला का दृश्य

एनसीआर कार्यालय, कौशांबी में दिनांक 25.06.2021 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में व्याख्यान देने के लिए श्री अमित प्रकाश, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार को आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला के शुभारंभ पर सर्वप्रथम श्री आर. एस तोमर, अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन/वाणि.) ने पुष्प गुच्छ भेंट कर श्री अमित प्रकाश, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), विद्युत मंत्रालय का स्वागत किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ अधिकारी (मानव संसाधन) ने हिंदी कार्यशाला में उपस्थित सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया गया तथा सरकारी काम–काज में आने वाली दिन–प्रतिदिन की

समस्याओं के समाधान हेतु मुख्य वक्ता से प्रकाश डालने का अनुरोध किया। कार्यशाला में व्याख्यान के दौरान श्री अमित प्रकाश ने राजभाषा हिंदी की संवैधानिक व्यवस्था पर प्रकाश डालते हुए राजभाषा नियम, 1976 में दिए गए प्रावधानों पर चर्चा की तथा उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा दिन प्रतिदिन के कामकाज में आने वाली समस्याओं पर प्रश्न पूछे गए। कार्यशाला के दौरान श्री अमित प्रकाश ने बताया कि हिंदी का प्रयोग केंद्रीय कार्यालयों में तेजी से बढ़ा है परंतु अभी भी अपेक्षानुरूप वृद्धि नहीं हुई है। श्री अमित प्रकाश ने उदाहरण प्रस्तुत कर हिंदी में काम–काज करने के आसान तरीके बताए तथा हिंदी के क्षेत्र में उनका कार्य का लंबा अनुभव होने के कारण हिंदी भाषा में कार्य करने हेतु छोटे–छोटे वाक्यों तथा शब्दों का प्रयोग कैसे किया जाए, इसे सरलता से समझाया तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने प्रतिदिन के कार्यों में उपयोग में लाने हेतु सावधानी बरतने पर जोर दिया। कार्यशाला के समापन के अवसर पर श्री आर. एस. तोमर, अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन/वाणि.) द्वारा अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति का आभार प्रकट करते हुए कहा कि हम सबको हिंदी में कार्य करने के संवैधानिक दायित्व का निर्वाह करने के लिए आगे आना चाहिए । उन्होंने कहा कि हिंदी कार्यशाला के माध्यम से सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अधिक से अधिक हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। उन्होंने कार्यशाला में समय देने के लिए श्री अमित प्रकाश को धन्यवाद दिया । कार्यशाला में 15 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

वीपीएचईपी पीपलकोटी

हिंदी कार्यशाला के कुछ दृश्य

विष्णुगाड–पीपलकोटी जल विद्युत परियोजना में 30.04.2021 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ श्री जे.एन. सिंह, महाप्रबंधक (परियोजना) द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर महाप्रबंधक (परियोजना) ने सभी प्रतिभागियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी के महत्व एवं महानता से अवगत कराया। श्री एस.के. शर्मा, उप महाप्रबंधक (एचआर एवं प्रशासन) के नेतृत्व में कार्यशाला को आगे बढ़ाया गया। उन्होंने राजभाषा के उद्देश्य एवं लक्ष्य के प्रति प्रतिभागियों को जानकारी दी। परियोजना के वरिष्ठ हिंदी अधिकारी ने सभी प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया एवं राजभाषा व उसके उपयोग को आसान बनाने हेतु उनका मार्गदर्शन भी किया। कार्यशाला में टिप्पण/आलेखन के अभ्यास के साथ ही राजभाषा नियम, 1976 के महत्वपूर्ण बिंदुओं के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी गई। कार्यशाला में 19 कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की। कार्यशाला के अंत में टिप्पण/आलेखन प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसमें श्री भगवती हटवाल, सहायक (संविदा एवं सामग्री प्रबंधन विभाग) ने सर्वाधिक अंक प्राप्त किए।

नराकास, हरिद्वार की 32वीं बैठक संपन्न

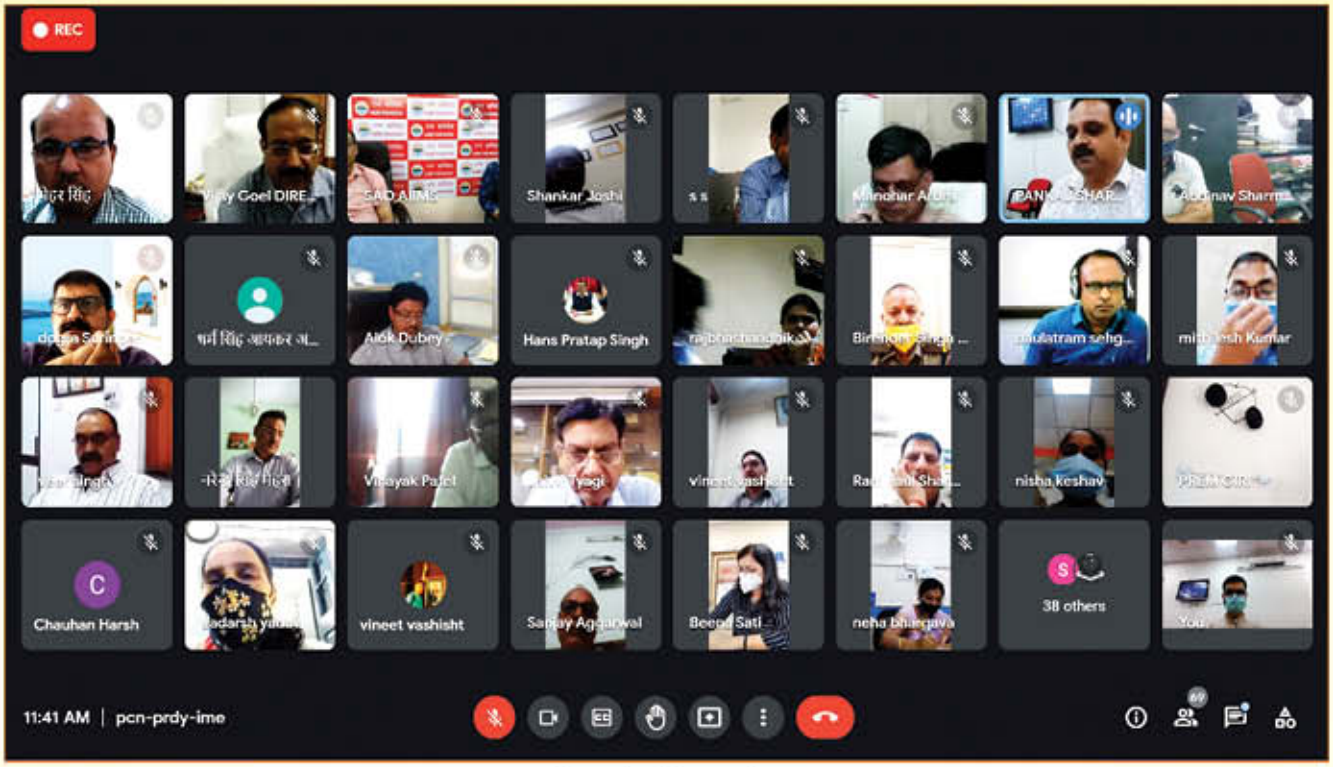

नराकास हरिद्वार की ऑनलाइन बैठक का दृश्य

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार की 32वीं अर्धवार्षिक बैठक 17 अगस्त, 2021 को पूर्वाह्न 11:30 बजे वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित की गई। बैठक में 43 संस्थानों के प्रमुख एवं प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सदस्य संस्थानों के हिंदी अधिकारियों/हिंदी समन्वयकर्ता अधिकारियों सहित कुल 110 प्रतिभागी ऑनलाइन जुड़े। बैठक में नराकास के माननीय अध्यक्ष एवं टीएचडीसी इंडिया लि. के निदेशक (कार्मिक), श्री विजय गोयल, महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री वीर सिंह, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय–2, गाजियाबाद के सहा. निदेशक (कार्यान्वयन), श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा, टीएचडीसी इंडिया लि., ऋषिकेश के उप महाप्रबंधक (मा.सं.), श्री आई. डी. तिग्गा एवं नराकास के सदस्य संस्थानों के प्रमुख एवं प्रतिनिधि ऑनलाइन उपस्थित थे। अनेक संस्थानों के प्रमुखों एवं प्रतिनिधियों ने अपने कार्यालय के सम्मेलन कक्षों में बनाए गए वेबरूम से बैठक में प्रतिभागिता की।

समिति सचिव, श्री पंकज कुमार शर्मा ने अध्यक्ष महोदय की अनुमति से बैठक की कार्यवाही प्रारंभ की। उन्होंने सर्वप्रथम पिछली बैठक के कार्यवृत्त पर सभी सदस्य संस्थानों से पुष्टि मांगी एवं प्रस्तुतीकरण के माध्यम से नराकास, हरिद्वार द्वारा संचालित की गई विभिन्न पहलों के बारे में जानकारी देते हुए पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों एवं कार्यलक्ष्यों पर की गई अनुवर्ती कार्रवाई के बारे में अवगत कराया तथा सदस्य कार्यालयों की हिंदी

प्रगति की अर्धवार्षिक रिपोर्ट के आंकड़ों की समीक्षा की। बैठक में नराकास हरिद्वार की वार्षिक हिंदी पत्रिका "ज्ञान प्रकाश" के 9वें अंक का ई–विमोचन भी किया गया।

सहा. निदेशक (कार्यान्वयन), श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा ने अपने संबोधन में कहा कि नराकास, हरिद्वार सदस्य संस्थानों में राजभाषा कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के क्रम में काफी प्रयास कर रही है और इन प्रयासों को निरंतर जारी रखने की आवश्यकता है। उन्होंने सुझाव दिया कि नराकास की बैठकों में 01 या 02 संस्थानों को अपने संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति से संबंधित प्रस्तुतीकरण देना चाहिए जिससे सभी संस्थान इससे प्रोत्साहित हो सकें। निष्क्रिय संस्थानों को नराकास से जोड़ने के लिए उन्होंने नराकास के अंतर्गत उप समिति बनाने के प्रस्ताव की सराहना की। उन्होंने सभी संस्थानों को राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) का अनुपालन सुनिश्चित करने, नियम–5 के अंतर्गत हिंदी पत्रों का उत्तर हिंदी में देने, अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों का उत्तर भी हिंदी में देने का आग्रह किया। इसके साथ ही संस्थानों में नियमित रूप से राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन करने एवं हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन करने को कहा। उन्होंने समिति को और अधिक क्रियाशील बनाने के लिए अनेक सुझाव भी दिए।

नराकास के माननीय अध्यक्ष एवं टीएचडीसी इंडिया लि. के निदेशक (कार्मिक), श्री विजय गोयल ने अपने संबोधन में श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा, सहा. निदेशक को क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गाजियाबाद में कार्यालय प्रमुख के रूप में कार्यभार ग्रहण करने के लिए शुभकामनाएं दी। उन्होंने कोविड की इन विषम परिस्थितियों के बावजूद नराकास की गतिविधियों एवं कार्यक्रमों में सहयोग देने वाले सदस्य संस्थानों का आभार व्यक्त किया। साथ ही समन्वयकर्ता सम्मेलन में निष्क्रिय सदस्य संस्थानों को नराकास से जोड़ने के लिए समन्वयकर्ता समिति का गठन करने के निर्णय का स्वागत करते हुए कहा कि इससे समिति में एक सुदृढ़ तंत्र विकसित होगा। उन्होंने इस समिति से यह भी अपेक्षा की कि यह समिति नराकास के भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा एवं इन्हें आयोजित कराने वाले संस्थानों को जिम्मेदारी सौंपने में भी सहायता करें। उन्होंने इस छमाही के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिता के प्रतिभागियों को बधाई दी तथा सदस्य संस्थानों से आग्रह किया कि सितंबर माह में अपने संस्थानों में हिंदी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा/माह आदि कार्यक्रम अपने संस्थान की मानव शक्ति के अनुसार धूमधाम से मनाएं एवं प्रोत्साहन योजनाओं तथा प्रतियोगिताओं के माध्यम से कर्मचारियों को पुरस्कृत कर प्रोत्साहित करें। उन्होंने आशा व्यक्त की कि जिस प्रकार समिति के सदस्य संस्थान मेहनत, लगन और ईमानदारी से राजभाषा कार्यान्वयन में जुटे हैं, उनकी यह मेहनत अवश्य ही रंग लाएगी और यह समिति एक दिन अवश्य ही बुलंदियों को छुएगी।

नराकास टिहरी की 21वीं अर्धवार्षिक बैठक संपन्न

नराकास टिहरी की ऑनलाइन बैठक का दृश्य

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, टिहरी की 21वीं अर्धवार्षिक बैठक दिनांक 28.07.2021 को श्री यू.के. सक्सेना, कार्यपालक निदेशक (टीसी) टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की अध्यक्षता में ऑनलाइन आयोजित की गई। सर्वप्रथम सचिव, नराकास ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री यू.के. सक्सेना, कार्यपालक निदेशक (टीसी), भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय–2, गाजियाबाद के सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा,

श्री ए.के. घिल्डियाल, महाप्रबंधक, परियोजना (कोटेश्वर), श्री सी.पी. सिंह, महाप्रबंधक, नई परियोजनाएं, नई टिहरी एवं सभी उपस्थित सदस्यों/प्रतिनिधि सदस्यों का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया।

इस बैठक में नराकास के अंतर्गत आने वाले केंद्रीय सरकार के विभिन्न कार्यालयों, बैंकों एवं सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों/स्वायत्त निकायों के प्रमुख/प्रतिनिधि सदस्य के रूप में उपस्थित हुए जिनकी संख्या लगभग 20 थी। बैठक की कार्यवाही को आगे बढ़ाते सचिव, नराकास ने बैठक में 13 सदस्य कार्यालयों से प्राप्त हुई अर्धवार्षिक रिपोर्ट की समीक्षा की।

सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) ने समीक्षा के दौरान राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3), राजभाषा नियम–5, हिंदी पत्राचार एवं टिप्पणी, हिंदी टंकण एवं आशुलिपि प्रशिक्षण एवं कम्प्यूटर में यूनिकोड प्रणाली आदि पर विस्तार से चर्चा की तथा रिपोर्ट में पाई गई खामियों से अवगत कराते हुए उन्हें भविष्य में दूर करने हेतु सलाह दी। श्री नेगी ने अपने संबोधन में सभी कार्यालयों से राजभाषा कार्यान्वयन को अपने–अपने कार्यालयों में प्रभावी ढंग से लागू करने हेतु अपेक्षा की।

बैठक की अध्यक्षता कर रहे श्री यू.के. सक्सेना, कार्यपालक निदेशक (टीसी), टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में बताया कि नराकास की अपनी सीमाएं हैं तथा सभी अधीनस्थ कार्यालयों के प्रमुखों/सदस्यों के सहयोग एवं समन्वय से नराकास की गतिविधियों को चरम सीमा तक ले जाया जा सकता है। राजभाषा विभाग, भारत सरकार ने हमें जो उत्तरदायित्व सौंपा है, उसे हम अपने स्तर से तथा आप सबके सहयोग से पूरा कर पा रहे हैं। विभिन्न प्रकार की हिंदी प्रतियोगिताओं को सुचारू रूप से कार्यान्वित करने हेतु हम हमेशा तत्पर हैं। उन्होंने नराकास में सदस्य संस्थानों की कम उपस्थिति को लेकर चिंता व्यक्त की।

नराकास टिहरी के सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी के सौजन्य से जुलाई माह में निबंध प्रतियोगिता एवं हिंदी कार्यशाला का ऑनलाइन आयोजन किया गया। कार्यशाला में नामित 35 प्रतिभागियों में से 30 प्रतिभागियों ने कार्यशाला में प्रतिभागिता की। निबंध प्रतियोगिता में सात सदस्य संस्थानों ने प्रतिभागिता की।

सचिव, नराकास ने सभी उपस्थित सदस्यों/प्रतिनिधि सदस्यों को अपना अमूल्य समय देने एवं उपस्थिति हेतु आभार व्यक्त किया। सभी सम्माननीय सदस्यों ने टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के द्वारा किए गए बैठक के सफलतापूर्वक ऑनलाइन आयोजन की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

कारपोरेट कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए ''अनुवाद प्रतियोगिता'' का आयोजन

(गूगल फार्म के माध्यम से)

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए दिनांक 09 जून, 2021 को पूर्वाह्न 11:30 बजे से 01:00 बजे तक ऑनलाइन ''अनुवाद प्रतियोगिता'' का आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता अधिकारियों/कर्मचारियों को अनुवाद के प्रति प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में प्रतिभागिता करने के लिए 31 अधिकारियों/कर्मचारियों से नामांकन प्राप्त हुए थे जिन्हें नियत समय एवं तिथि को प्रतियोगिता के प्रश्न–पत्र की लिंक भेजी गई। इनमें से 21 अधिकारियों/कर्मचारियों की प्रविष्टियां प्राप्त

हुई। इन प्रविष्टियों का मूल्यांकन कर विजेताओं की घोषणा की गई।

प्रतियोगिता में श्री जी.एस. रावत, उप प्रबंधक (कार्मिक–नीति) ने प्रथम, श्री दिलीप कुमार द्विवेदी, वरि. प्रबंधक (कार्मिक–कल्याण) ने द्वितीय, श्री शिवराज चौहान, उप महाप्रबंधक (अ.एवं प्र. निदे. सचिवालय) ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। साथ ही श्री अजय कुमार, वरि. प्रबंधक (भूगर्भ एवं भू–तकनीकी) तथा श्रीमती महक शर्मा, वरि. कार्मिक अधिकारी (कार्मिक–स्थापना) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

संपादक के नाम पाती

आदरणीय महोदय, पहल: अंक– 27 प्राप्त हुआ। श्री हरीश चंद्र उपाध्याय ने अपने आलेख 'चमोली जल प्रलय एवं बांध' में अनेक महत्वपूर्ण विषयों को विश्लेषित किया है। तकनीकी विश्लेषण के साथ–साथ उन्होंने विषय विशेषज्ञ के रूप में महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए हैं। श्री एस. के. चौहान का व्यंग्य 'लेखक और लॉकडाउन' श्री दिलवर सिंह पंवार का आलेख 'योगश्चः चित्त वृत्ति निरोधः तथा श्रीमती अनुपमा गोविल का आलेख 'ध्यान' अत्यंत प्रशंसनीय है। काव्य खंड में भी समस्त रचनाकारों ने अपनी–अपनी कविताओं में सशक्त रचनात्मक कौशल का परिचय दिया है। श्री के. सी. उनियाल की कविता 'पत्थर' ने विशेष रूप से प्रभावित किया। पत्रिका में राजभाषा अनुभाग का परिश्रम स्पष्ट रूप से झलक रहा है। रिपोर्ट एवं उनके फोटोग्राफ का सामंजस्य उत्कृष्ट है। पूर्ण विश्वास है कि 'पहल' का आगामी अंक भी इसी प्रकार उत्कृष्टता के उत्तम मापदंडों पर प्रकाशित होगा। शुभकामनाओं सहित!

डॉ. राजनारायण अवस्थी
वरिष्ठ अधिकारी (रा.भा.) एवं प्रभारी, राजभाषा अनुभाग
कृते इलेक्ट्रॉनिक्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

माननीय, सादर नमस्कार। मुझे आप द्वारा प्रेषित पहल पत्रिका का 27वां अंक मिला। पूर्व में भी आप द्वारा प्रेषित अंक भी मुझे प्राप्त होते रहे। इसके लिए आपका हृदय से साधुवाद। 'पहल' का जो अंक अभी मिला, पूरा पढ़ा। पत्रिका में आपके विभाग की, विशेषकर आपकी संपादन कला का उत्कृष्ट उदाहरण सामने आया। लेख, तकनीकी लेख व प्रेरक प्रसंग रोचक व ज्ञानवर्धक हैं। व्यंग्य व कविताएं भी श्रेष्ठ है। प्रकाशन सामग्री का चयन सुंदर है। सबसे विशेष बात है फोटो व कवर पेज विशेष आकर्षण पैदा करते हैं। कुल मिलाकर 'पहल' का प्रकाशन उत्कृष्ट है। यह स्तर भविष्य में भी बना रहे। आपके विभाग के उच्च अधिकारियों व कर्मचारियों के पत्रिका में सहयोग के लिए बधाई व आपको हृदय से शुभकामनाएं!

महेन्द्र शर्मा
आ.सं. 3073, ज्वाय अपार्टमेंट्स, प्लाट नं. 2, सेक्टर–2, द्वारका, नई दिल्ली

हास-परिहास

केवल मादा मच्छर ही खून चूस सकती है, नर मच्छर केवल आवाज़ करते है ! धन्य हो प्रभु! आपका सिस्टम हर जगह सेम है !

भगवान ने एक बूढे से पूछा :– अब तुम्हारा बुढ़ापा आ गया है। कर्म के हिसाब से मुझे तुमको बीमारी देनी होगी। तुम्हारी भक्ति की वजह से दो में से एक बीमारी चुनने का मौका देता हूँ। या तो "याददाश्त खो जाएगी" या "हाथ पैर काँपेंगे"! बूढे ने अपने मित्र से पूछने की इजाजत लेकर मित्र से पूछा । मित्र ने कहा कि हाथ–पाँव काँपने की बीमारी माँगना। क्योंकि गिलास में से एकाध पेग छलक जाए तो कोई बात नहीं। पर बोतल रखी कहाँ हैं, ये ही भूल जाओ तो भारी मुश्किल हो जाएगी। एक सच्चा दोस्त गलत सलाह कभी नही देता।।

एक अंग्रेज़ी क्लास का विज्ञापन.. एक महीने में फर्राटेदार अंग्रेज़ी बोलना सीखें ! महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत की छूट ! किसी ने पूछा :– महिलाओं को छूट क्यों ? क्लास वाले :– उन्हें फर्राटे से बोलना तो पहले से ही आता है, सिर्फ अंग्रेज़ी सिखानी हैं..!!!

पत्नी :– शादी से पहले तुम मुझे होटल, सिनेमा और न जाने कहां–कहां घुमाते थे... शादी हुई तो घर के बाहर भी नहीं ले जाते.....
पति:– कभी चुनाव के बाद प्रचार देखा है।

शिक्षक : तुम्हें पक्षी का पैर देखकर उसका नाम बताना है।
चप्पू : नहीं सर मुझे नहीं आता।
शिक्षक: तो तुम फेल हो गये हो, अपना नाम बताओ।
चप्पू : मेरा पैर देखकर पता कर लो।

टीचर: बताओ, बिजली कहां से आती है?
छात्र : मेरे मामा के घर से ।
टीचर: वो कैसे ?
छात्र : जब भी बिजली भागती है, तो मेरे पापा कहते हैं, सालों ने फिर भगा दी।

संजू ने पूछा : पापा ये मर्द कौन होता है ?
पिता : जो इंसान पूरे घर पर हुक्म चलाए, वो मर्द होता है ।
संजू : पापा मैं भी बड़ा होकर मम्मी की तरह मर्द बनूंगा !

गर्लफ्रेंड: यार, बस स्टॉप पर 1 घंटे तक बस ही नहीं आई. फिर मैंने बीएमडब्ल्यू खरीदी...!
बॉयफ्रेंड: वाह, लेकिन इतने पैसे आए कहां से...?
गर्लफ्रेंड: अरे! मैं गाड़ी की नहीं, बिसलरी मिनरल वॉटर की बात कर रही हूं..बहुत तेज प्यास जो लगी थी ना...! बॉयफ्रेंड ने हाथ जोड़ लिए।

अध्यापक: बताओ सबसे ज्यादा नशा किस चीज में होता है...?
बच्चा: किताबों में...
अध्यापक: वो कैसे? मैं समझा नहीं...
बच्चा: किताब खोलते ही नींद, जो आ जाती है...

पुलिस दरवाजा खटखटाते हुए..... हम पुलिस हैं, दरवाजा खोलो।
पप्पू : क्यों खोलूं ?
पुलिस : क्योंकि हमें कुछ बात करनी है!
पप्पू : तुम लोग कितने हो।
पुलिस : हम 3 हैं।
पप्पू : तो आपस में बात कर लो, मेरे पास टाइम नहीं है!

हर इंसान के अंदर एक शैतान छुपा होता है, जो सिर्फ आधार कार्ड के फोटो में ही दिखाई देता है !

सिक्योरिटी गार्ड के लिए इंटरव्यू में पूछा– अंग्रेजी आती है ?
मोहन: क्यों, चोर ब्रिटेन से आएंगे क्या ?

पति– जब तुम्हारे पास डीएल था, तो फिर तुम्हारा चालान क्यों कटा...?
पत्नी – उसमें मेरी फोटो अच्छी नहीं थी, इसलिए मैंने दिखाया ही नहीं ।

दुःख, शोक, जब जो आ पड़े,
सो धैर्यपूर्वक सब सहो,
होगी सफलता क्यों नहीं,
कर्तव्य पथ पर दृढ़ रहो।

अधिकार खोकर बैठे रहना,
यह महादुष्कर्म है,
न्यायार्थ अपने बंधु को भी,
दंड देना धर्म है।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त
(03 अगस्त, 1885 - 12 दिसंबर, 1965)

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED
(भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार का संयुक्त उपक्रम)

गंगा भवन, प्रगतिपुरम, बाईपास रोड, ऋषिकेश–249201 (उत्तराखंड)
दूरभाषः 0135–2473614, वेबसाइटः http://www.thdc.co.in
पंकज कुमार शर्मा, वरि. हिंदी अधिकारी द्वारा टीएचडीसीआईएल के लिए प्रकाशित
(निःशुल्क आंतरिक वितरण के लिए)